SAPTHAGIRI (HINDI)
SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY
Volume:53, Issue: 5
October-2022, Price Rs.20/-
No. of pages-56.

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

अक्तूबर-2022

रु.20/-

01-10-2022
शनिवार
रात - गरुडवाहन

आं.प्र. राज्य, एस.पी.एस.आर.नेल्लूर जिले में स्थित ए.सी.सुब्बारेड्डी स्टेडियम में ति.ति.दे. के द्वारा आयोजित नमूने मंदिर में दि. 16-08-2022 से दि. 20-08-2022 तक 'श्री वेंकटेश्वर वैभवोत्सव' कार्यक्रम को संपन्न किया गया है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत सुप्रभात सेवा, तोमाल सेवा, अर्चना, सहस्रदीपालंकार सेवा, अष्टदल पाद पद्माराधना, वसंतोत्सव आदि पूजा कार्यक्रमों को वैदिक विधान में संपन्न किया गया है। इस संदर्भ में ति.ति.दे. की न्यास-मंडली के अध्यक्ष श्री वाई.वी.सुब्बारेड्डी और उनकी धर्मपत्नी ने भाग लिया है। इस संदर्भ में अधिक संख्या में भक्त गण भाग लेकर भगवान जी को दर्शन किया है।

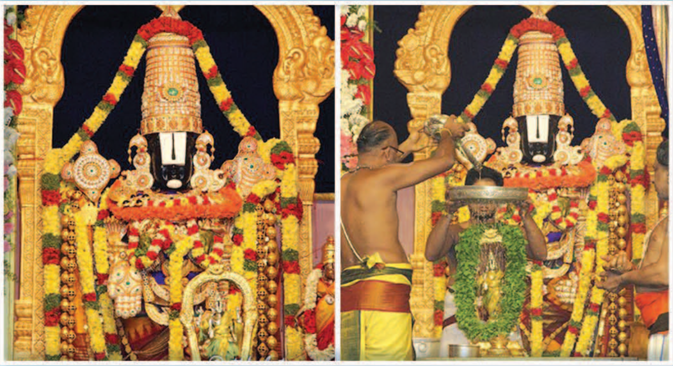

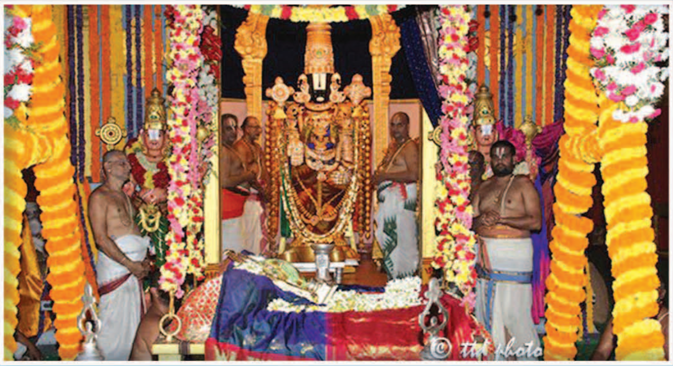

कथं न ज्ञेयमस्माभिः पापादस्मान्निवर्तितुम्।
कुलक्षयकृतं दोषं प्रपश्यद्भिर्जनार्दन॥

(- श्रीमद्भगवद्गीता १-३९)

परंतु हे जनार्दन! कुल के नाश से उत्पन्न दोष को जाननेवाले हम लोगों को इस पाप से हटने के लिये क्यों नहीं विचार करना चाहिए।

माहात्म्य मेतद्गीतायाः कृष्ण प्रोक्तं पुरातनम्।
गीतान्ते पठते यस्तु यथोक्त फलभाग्भवेत्॥

(- गीता मकरंद, गीता की महिमा)

सूत बोले —

भगवान श्रीकृष्ण के द्वारा बोधित इस गीता की महिमा को गीता पारायण के बाद जो मनुष्य पढेगा वह उत्कृष्ट फल प्राप्त करेगा।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति

श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास

"मानव सेवा ही माधव सेवा है" - इसी लक्ष्य के साथ, ति.ति.दे. विविध हितकर कार्यों का निर्वहण समाज के लिए कर रही है। इस क्रम में ति.ति.दे. ने १९४३ वर्ष में अनाथ बाल बच्चों के संरक्षणार्थ 'श्री वेंकटेश्वर बालमंदिर (तिरुपति) न्यास' की स्थापना की। आजकल 'श्री वेंकटेश्वर बालमंदिर न्यास', श्री वेंकटेश्वर जलनिधि योजना, कल्याणमस्तु न्यास, श्री वेंकटेश्वर समाचार सांकेतिक न्यास आदि को अपने में मिलाकर 'श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास' के रूप में परिणत हुआ है।

श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास के लक्ष्य

01) अनाथ बाल बालिकाओं, वृद्ध, निराश्रित, अभागे, निर्धन एवं निर्बलवर्ग के व्यक्तियों की अभिवृद्धि, रक्षा, उनके कुशल क्षेम के लिए धर्मशालाओं एवं आवास प्रदत्त करना। अनाथ एवं निर्धन विद्यार्थी-विद्यार्थियों को आर्थिक रूप से सशक्त करना।

02) दिव्यांगों एवं मनोरोगियों के लिए आवश्यक चिकित्सा की सुविधाओं की व्यवस्था करना एवं उनके जीवन शैली को सुधारना। इस प्रक्रिया में किसी वर्ग एवं वर्ण भेद को त्यागकर सभी लोगों को एक ही स्तर में स्वीकार करना।

03) बाढ़, अकाल जैसी प्रकृतिक विपत्ति के संभवित समय में, अग्निफैलान जैसी अवांछनीय विपत्ति के उठने पर, तक्षण उनकी सहायता के लिए तैयार रहना।

04) जो बच्चे बहरे या मूक होते हैं, उनकी उन्नति के लिए पुनर्वास केन्द्रों की व्यवस्था करना।

05) उपर्युक्त लोप से त्रस्त ग्रामीण बाल बच्चों के लिए आवश्यक उपकरणों का वितरण करने के साथ-साथ उनको शिक्षा प्रदान करना।

06) समाज में पीने के पानी, जो अत्यधिक आवश्यक पेय पदार्थ है, उसको उपलब्ध कराना, तिरुमल पंचायती तथा तिरुपति नगर पालिका के लिए आवश्यक जल संसाधन की पूर्ति के लिए पुल एवं तालाबों का निर्माण करना। पानी के मितव्यय के लिए आवश्यक कार्यवाही करना।

07) पाठ्य पुस्तकों के साथ, इंटरनेट (अंतर्जाल) जैसी आधुनिक, सांकेतिक सुविधाओं को उपलब्ध कराकर, उसके द्वारा हमारे देश का इतिहास, सांस्कृतिक दाय प्राप्त संपदा को भावी पीढियों तक पहुँचाना।

08) समाज में शिष्टाचार तथा नैतिक मूल्यों के विकास के लिए युवा पीढ़ी में आत्मविश्वास को बढाना।

09) विवाह संपन्न कराने के द्वारा हितैषी के रूप में वधू-वर को आत्मविश्वास तथा गौरव के साथ जीवनयापन करने के लिए योग्य बनाना।

10) जो व्यक्ति उपर्युक्त कार्यक्रमों में कार्यरत हैं, उन व्यक्तियों तथा संस्थाओं की मदद करना। जो भी कार्य चालू हैं उनको बिना किसी लाभ की अपेक्षा किये, लक्ष्यसिद्धि को प्राप्त करना।

श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास के लिए इस रूप में चंदा भेजिए...

01) इस योजना के लिए कम से कम रु.१,०००/- भेजें।

02) अगर, चंदा रु.१०००/- से कम हो, तब उसे श्रीवारि हुण्डी के खाते में जमा किया जाता है और चंदादार को इसके बारे में कोई सूचना नहीं दी जाती है। सभी चंदादारों की चंदा किसी राष्ट्रीय बैंक में जमा की जाती हैं और उस पर जो सूद मिलता है, उसे उक्त योजनाओं के लिए खर्च किये जाते हैं। आप, अपनी चंदा को किसी राष्ट्रीय बैंक से, चेक या डिमांड ड्राफ्ट के द्वारा 'श्री कार्यनिर्वहणाधिकारी, श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास, ति.ति.दे., तिरुपति' के नाम पर लेकर, 'प्रधान गणांकाधिकारी (चीफ़ अकौण्ट्स आफ़ीसर), ति.ति.दे., तिरुपति - ५१७ ५०७' के नाम पर भेज सकते हैं।

अन्य विवरण के लिए दूरभाष - ०८७७-२२६४२५८ को संपर्क करें।

सप्तगिरि

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति।।

वर्ष-५३ अक्तूबर-२०२२ अंक-०५

विषयसूची

गरुत्मान् का वैभव	श्री श्याम गिलड़ा	07
शरणागति मीमांसा	श्री कमलकिशोर हि. तापडिया	11
माँ दुर्गा के नौ रूपों की वैभवता	डॉ.एच.एन.गौरीराव	14
तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर (तिरुपति बालाजी)	प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव प्रो.गोपाल शर्मा	18
केदारगौरी व्रत की महिमा	डॉ.के.सुधाकरराव	21
श्री प्रपन्नामृतम्	श्री रघुनाथदास रान्दड	24
श्री रामानुज नूट्रन्दादि	श्री श्रीराम मालपाणी	26
अप्पलायगुंटा श्री प्रसन्न वेंकटेश्वर स्वामी की वैशिष्ट्य	डॉ.पी.बालाजी	31
श्री वेंकटाचल की महिमा	आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	33
यशोदा	डॉ.के.एम.भवानी	36
भृगु महर्षि	डॉ.जी.सुजाता	38
श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108	श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया	41
वकुला माता	आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	43
कडी पत्ता	डॉ.सुमा जोषि	45
अक्तूबर महीने का राशिफल	डॉ.केशव मिश्र	47
नीतिकथा - आत्म संयम	श्री के.रामनाथन	48
चित्रकथा - जो आया है वही फल्गुण	डॉ.एम.रजनी	50
क्विज		52

website: www.tirumala.org or www.tirupati.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है। सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri.helpdesk@tirumala.org

मुखचित्र - गरुडवाहन पर श्री मलयप्पस्वामी, तिरुमल।
चौथा कवर पृष्ठ - चक्रस्नान, तिरुमल।

गौरव संपादक
श्री ए.वी.धर्मारेड्डी, आई.डी.ई.एस.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी(एफ.ए.सी), ति.ति.दे.

प्रधान संपादक
डॉ.के.राधारमण

संपादक
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम

उपसंपादक
श्रीमती एन.मनोरमा

मुद्रक
श्री पी.रामराजु
विशेष अधिकारी,
पुस्तक बिक्री केंद्र & मुद्रणालय,
ति.ति.दे., तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक चित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

एक प्रति .. रु.20-00
वार्षिक चंदा .. रु.240-00
जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) .. रु.2,400-00
विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा .. रु.1,030-00

अन्य विवरण के लिए
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 2264359, Editor - 2264360.

सूचना
मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।
- प्रधान संपादक

संपादकीय

दीपों के महापर्व का महाप्रकाश

'तमसोमा ज्योतिर्गमय' उपनषदीय यह महाप्रार्थना मानव जीवन की आशावान जययात्रा है। मनुष्य सदा अंधकार से प्रकाश की ओर जाना चाहता है। यह ज्ञान के संदर्भ में हो या उत्साह, वृद्धि, प्रगति, विकास आदि के संदर्भों में क्यों न हो। मनुष्य के जीवन में प्रकाश के सहज दीपस्तंभ सूर्य, चंद्र और तारे हैं। तो मनुष्य ने अपनी सभ्यता के विकास क्रम में 'दीप' का आविष्कार कर लिया है। प्रति कार्यक्रम, प्रति उत्सव, प्रति पर्व, प्रति शुभ कार्य दीप-प्रज्वलन से ही शुभारंभ होते हैं। भारतीय संस्कृति और संप्रदाय में ही नहीं प्रत्येक मानव-सभ्यता में दीप या प्रकाश का इतना महत्व है। मनुष्य के जीवन में इतना महत्व रखनेवाले 'प्रकाश' को भी भारतीयों ने एक पर्व के रूप में सूचिबद्ध कर लिया है। वही प्रकाश पर्व 'दीपावली' है। दीपों की अनगिनत मालिका है। भारतीय पूजाविधान में भी 'दीप प्रज्वलन' को अन्यतम स्थान मिला है। दीप प्रज्वलन से प्रकाश का प्रसार होकर घर-घर में नकारात्मक शक्ति दूर होकर सकारात्मक शक्ति का संचार होता है। सकारात्मक शक्ति से घर के सदस्यों के यश एवं वैभवता बढ़ते हैं। सारी मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए योजित पर्व ही 'दीपावली' है।

अमावास्या के तिमिर को दीप का प्रकाश चीर-फाडकर भगाता है। मनुष्य को और मानवता को अपने प्रकाश से उद्धीप्त करके प्रशस्त रास्ता दिखलाता है। भारतीय यह संस्कार अति प्राचीन है। पुराणों का प्रामाणिक त्यौहार 'दीपावली' लक्ष्मी वैभवता, स्त्री शक्ति की पराक्रमता को निरूपित करनेवाला पर्व भी है। अमावास्या के घन-घोर अंधकार को दीप अपने झिल-मिल प्रकाश से पूरे जगत को चकाचौंध कर देते हैं। दीपों की पंक्ति 'दीपावली' है।

इससे अलग हर घर, मुहल्ला, गलियों में दीपों को प्रज्वलित करने से वातावरण में फैले हानिकारक सूक्ष्म कीटानु नष्ट हो जाते हैं। इससे सकारात्मक ऊर्जे का भी निर्माण होता है। साथ ही मन के नकारात्मक विचारों को भी दूर भगाता है। इससे अलग दीपों की पंक्ति सामाजिक एकता का भी सूचक है। एक अकेला दीप जो नहीं कर सकता है वही अनेक दीप मिलकर पूरे अंधकार को दूर कर सकते हैं। इसलिए घर के बाल बच्चे, वृद्ध, स्त्रियाँ सब मिलकर इस दीपोत्सव को पर्व के रूप में मनाते हैं।

यह दीपों का पर्व 'धनतेरस' से आरंभ होकर 'नरक चतुर्दशी', मुख्य पर्व 'दीपावली', 'गोवर्धन पूजा' से होते हुए 'भाई दूज' से समाप्त होता है। सामाजिक एकता के साथ-साथ साफ-सफाई और लक्ष्मी-पूजा विशेष रूप से करने से पूरे समाज में स्वच्छ व स्वास्थ्य पूरक वातावरण की सृष्टि होकर सारे प्रसन्न होते हैं। इस पर्व के इस असली अर्थ को समझकर सांप्रदायिक ढंग से मनाने से सभी के जीवन में सुख-समृद्धि, स्वास्थ्य-लाभ के साथ-साथ अनेक शुभ संपन्न होते हैं।

जय माताजी।

गरुत्मान् का वैभव

- श्री श्याम गिलड़ा
मोबाइल - 9246348605

गरुड़जी को सम्प्रदाय में ''पेरिया तिरुवडी'' के नाम से भी बुलाते है। गरुड़जी की महिमा, गौरव के गुणगान में शब्द भी कम पड जाते है। भगवान श्रीमन्नारायण (विष्णुजी) ने, गरुड़जी को हर जगह महत्व दिलवाया है। गरुड़जी भी सदा भगवत् कैंकर्य, भगवान श्रीमन्नारायण की सेवा करने के लिये तत्पर रहते है।

१) गरुड़जी को और भी कई नामों से जानते है जैसे, कृतमान, सुपर्ण, पादकेन्द्रन, पक्षिराजन, दर्शयाम, मोदक मोदर, मल्ली पुष्प प्रियवर, मंगलालयर, क्षेमकरी, पेरिया तिरुवडी, जय गरुडन पुळ्ळरसु, कालूलन, सुवनंगिरी, वैनतेय, वेदात्मा... आदि।

२) मंगलवाद्य यंत्र १६ प्रकार के है, इनसे जो ध्वनि निकलती है, उसे आदोद्यम् कहते है, और गरुड़जी की ध्वनि इस ''आदोद्यम्'' ध्वनि जैसी ही होती है।

३) ''गरुडम् दर्शनम् पुण्यम् ततोपि ध्वनि रुच्यतेय्'' द्रविड़ वेदों की यह सूक्ति गरुड़जी के दर्शन और उनकी ध्वनि सुनने के महत्व को बतलाती है।

४) वैष्णव देवालयों में, तिरु आराधना के समय में जो घंटी बजती है, उस घंटी में गरुड़जी का ही आह्वान करते है। तिरु आराधना में वेद मन्त्रों

के साथ, घंटी का भी बजते रहना आवश्यक है, इस घंटी की ध्वनि को, गरुड़ ध्वनि की जगह बतलाते है।

५) गरुड़जी की कृपा से, उत्तम स्मरण शक्ति, वेदांत ज्ञान, वाक्पटुता (सुवक्ता) प्राप्त होती है।

वेदांत देशिक स्वामीजी, गरुडजी की ही ध्यान किये, तब गरुड़जी ने ही उन्हें, भगवान हयग्रीव का विग्रह प्रदान कर, हयग्रीव मन्त्र भी प्रदान किये थे।

६) भगवान श्रीमन्नारायण के जितने भी वाहन है, उन वाहन के वाहन नहीं होते, पर भगवान श्रीमन्नारायण के वाहन गरुड़जी को, वायु वाहन के रूप में प्राप्त है। विष्णु सहस्त्रनाम के श्लोक संख्या १०४ में आता है ''सुपर्णो वायुवाहनः।''

७) पांडव भगवान कृष्ण के नेतृत्व में, महाभारत का युद्ध भी ''गरुड व्यूह'' की रचना कर जीते थे।

८) भगवान रामजी और रावण के युद्ध में जब भगवान रामजी और लक्ष्मणजी नाग पाश में बंध गये तब, गरुडजी ने ही नाग पाश के बंधन काटे थे।

९) गरुडजी के वेग से प्रसन्न हो, भगवान ने श्रीविल्लिपुत्तुर में उन्हें अपने अर्धासन पर स्थान दिया।

१०) समुद्र मंथन के समय भी, गरुड़जी ने ही मंदराचल पर्वत को अपनी पीठ पर धारण कर, समुद्र के बीच रखा था।

११) भगवान श्रीनिवासजी (तिरुवेंगड़म), की आज्ञा से अष्ट विमानों में एक ''क्रीडाचलम'' को वैकुण्ठ से लाकर, तिरुवेंगडम पर स्थापित किये, जिसे आज ''आनन्दनिलय'' के नाम से जानते है।

गरुडजी के इस कैंकर्य से प्रसन्न हो, भगवान श्रीनिवासजी ने अपने स्थान पर एक पर्वत का नाम ''गरुडाचल'' रखा।

१२) दैत्य राज विरोचन से युद्ध कर ''वैरमुडी'' किरीट भी, गरुड़जी ही लाये थे और उसे भगवान कृष्ण को दिये। वर्तमान में जिसे भगवान सम्पत कुमारजी (सेल्वा पिल्लै, मेल्कोटे) में 'वैरमुडी उत्सव' के दिन धारण करते हैं।

१३) गरुड़जी जब अपनी माताजी को, कद्रुका के बन्धन से मुक्त करवाने अमृत कलश लेकर आये, तब अमृत कलश तृण पर रखे थे, वह भी अमृत कलश का स्पर्श पाकर, वह तृण ''अमृत वीर्य'' नाम का बना, जिसे वर्तमान में सभी ''दर्भ'' के नाम से जानते है।

१४) सनातन धर्म में, जब भी किसी नये गाँव शहर की, या यज्ञ शाला में वेदी के निर्माण की, या युद्ध के

समय सेना के संयोजन में, ये सब विशाल पंख फैलाये उड़ते हुए गरुड़जी की मुद्रा में आयोजित करते है।

यह मान्यता है की, उड़ते हुए गरुड़जी, विजय के प्रतीक हैं। यह भी कहते है पुरातन काल में तंजावुर भी इसी तरह बना हुआ था, और उसका नाम उस काल में ''गरुडापुरी'' था।

१५) भगवान गरुड़जी, ५ तरह के वायु के अधिष्ठान देवता है, यह वायु जीव मात्र के लिये जीवनधार है।

१६) गरुड़जी का माला मंत्र भी है, जिस का जप किया जाता है। अथर्वण वेद के अनुसार ३२ विद्याओं में गरुड़जी का प्रथम स्थान है।

१७) वैष्णव मंदिरों के ब्रह्मोत्सव में, ब्रह्मोत्सव के प्रथम दिवस सबसे पहले ध्वजारोहण किया जाता है। याने भगवान गरुड़जी चिह्नित ध्वज को ध्वजस्तंभ, सामान्य बोल चाल की भाषा में जिसे गरुड स्तंभ कहते है, पर ऊँचा फहराते है, जो उस देवस्थान में ब्रह्मोत्सव के प्रारम्भ का सूचक होता है।

इसे ''ध्वजारोहण'' कहते हैं। सम्प्रदाय में यह मान्यता है की, गरुड़जी वैष्णव देवस्थान के ब्रह्मोत्सव की सूचना देवलोक में सभी देवों को देकर, ब्रह्मोत्सव में आमंत्रित करते हैं। भगवान श्रीमन्नारायण को भी लेकर आते है। ब्रह्मोत्सव के अंतिम दिवस, गरुड ध्वज को निचे उतर लिया जाता है, जो ब्रह्मोत्सव के समापन का सूचक है, इस ''ध्वजावरोहण'' कहते हैं।

१८) गरुडजी भगवान श्रीमन्नारायण की सेवा में रत नित्यसुरी है। संन्यासियों के प्रमुख देवता भी है।

९९) गरुजडजी का तिरुनक्षत्र स्वाति है। वेदों में इस नक्षत्र को विशेष और बहुत ही महत्व दिया गया है। इस नक्षत्र को ''ज्योतिर नक्षत्र'' भी कहते हैं।

पेरिया आळवार जो गरुडजी के अंश है, उनका तिरुनक्षत्र भी स्वाति है। भगवान नृसिंह का आविर्भाव भी इस नक्षत्र में ही हुआ। सम्प्रदाय के दो आळवार संत गरुडजी के अंश है, १) पेरिया आळवार और २) मधुर कवि आळवार।

चातक पक्षी भी सिर्फ स्वाति नक्षत्र में बरसनेवाले पानी को ही ग्रहण करता है। यह भी मान्यता है की स्वाति नक्षत्र की पहली बूंदे जो ''सीप'' में गिरती है, वे ही मोती बनते हैं, और यह बेशकीमती होते हैं।

२०) भगवान श्रीमन्नारायण (भगवान विष्णुजी), के ध्वज पर गरुड़जी ही विराजमान है, जो भगवान की दैत्यों पर विजय का सूचक है, भगवान गरुडजी, भगवान श्रीमन्नारायण के चार व्यूह मूर्तियों, १)वासुदेव, २)संकर्षण, ३)प्रद्युम्न और ४) अनिरुद्ध... में संकर्षण नाम से अवतरित हैं।

भगवान के ध्वज पर विराजित गरुड़जी के चित्र को देख कर भी, इनकी महिमा की गाथाएँ कही जाती हैं।

२१) गरुडजी भगवान श्रीमन्नारायण के सारे अंतरंग कैंकर्य करते है, गरुड़जी भगवान श्रीमन्नारायण के बहुत ही अंतरंग कैंकर्यपरार माने गये, वह भगवान के ७ प्रकार से कैंकर्य करते है।

२२) गरुड़ भगवान के पांच व्यूह है १)सत्यन, २)सूपमान, ३)गरुडन, ४)दार्शयान और ५)विहकेस्वरन।

गरुडजी का मंत्र पंच अक्षर का है। गरुड़जी के विश्वामित्र ऋषि है और भगवान श्रीमन्नारायण देवता है।

गरुडजी का कुछ इस जगत के भौतिकवादी देशों और जीवों में महत्व -

२३) मौर्य राजवंश ने गरुडजी को सौभाग्यशाली देवता माना, गुप्ता काल में राजा कुमार गुप्त, समुद्र गुप्त

ने अपने राजचिह्न मुहर और मुद्रा पर गरुडजी को ही अंकित किया। देवगिरि यादवों के काल में उनके ध्वज पर गरुड़जी ही अंकित थे, यहाँ तक की बौद्ध भी गरुड़जी को मानते थे।

२४) कहते है की गरुड़जी के पंखों की छाँव खेतों खलिहानों पर पड़ जाये तो वहाँ की फसल अच्छी हो जाती है।

२५) अमेरिका की राजकीय मुहर और राजकीय पक्षी गरुड़जी ही है। राजकीय कार्य में और वहाँ के राष्ट्रपति की मोहर में भी गरुड़जी है। वहाँ गरुड़ को स्वर्ण पक्षी के नाम से जानते हैं। गरुड़जी को सौभाग्यशाली पक्षी मानते है।

लोगों का मानना है कि इस वजह से वह शक्तिशाली और समृद्धशाली देश है।

२६) इंडोनेशिया ने अपनी राष्ट्रीय एयरलाइन का नाम ''गरुड इंडोनेशिया'' रखा है।

इस तरह यह सूची और भी लम्बी हो सकती है।

परकाल स्वामी ने अपनी रचना ''सिरिय तिरुमडल्'' में कहा है, गजेंद्र जब अपने प्रयास और अपनी शक्ति में हार गया, तब उसने भगवान श्रीमन्नारायण को पुकारा ''नारायणो मणिवन्ना नगन्नयाय् वारै एन् आरिदरै नीकै'', और भगवान श्रीमन्नारायण, गजेंद्र की आर्त पुकार सुन, गरुडारूढ़ हो तुरंत क्षण में ही पहुँच गये।

सम्प्रदाय के दिव्यदेशों में एक, नाच्चियार कोयिल दिव्यदेश, जो कुंबकोणम के पास स्थित है, उस गरुड़जी के विग्रह को काल गरुडन नाम से पूजते हैं, यह विग्रह काले पाषाण का बना हुआ है, प्रत्यक्ष गरुड़जी है।

इस दिव्यदेश के उत्सव में जब भगवान गरुडारूढ हो नगर भ्रमण के लिये निकलते है, तब मंदिर से बाहर आते समय भगवान की वाहनारूढ सवारी को उठाने ४ व्यक्ति ही काफी होते है, पर मंदिर के बाहार आने तक ८ व्यक्तियों की जरूरत हो जाती है। जैसे-जैसे सवारी मंदिर से दूर होती ही, वैसे-वैसे सवारी का वजन बढ़ता जाता है, और सवारी को उठाने १६, ३२, ६४ और शहर के या भगवान की यात्रा के मध्य में १२८ व्यक्तियों की जरूरत पड़ती है, जैसे-जैसे सवारी मंदिर के नजदीक आती है, वैसे-वैसे फिर सवारी हलकी होती जाती है।

यह अद्भुत आज भी प्रत्यक्ष देखने को मिलता है।

जय श्रीमन्नारायण।

आगस्त महीने का क्विज-1 के समाधान

1) वरलक्ष्मी
2) श्रावण मास शुक्ल पक्ष पंचमी
3) सिकन्दर की पत्नी
4) रोहिणी
5) गणेश चतुर्थी / विनायक चविती
6) आठवीं
7) श्री महाविष्णु
8) चक्रस्नान
9) नैमिशारण्य
10) शर्याति
11) अश्विनी देवता
12) हल
13) गणेश
14) चंद्रमा
15) सरस्वती

(गतांक से)

सियाराम ही उपाय

शरणागति मीमांसा

(षष्टम खण्ड)

सियाराम ही उपेय

मूल लेखक
श्री सीतारामाचार्य स्वामीजी, अयोध्या

प्रेषक
दास कमलकिशोर हि. तापडिया
मोबाइल - 9449517879

122

श्रीमते रामानुजाय नमः

और किसी प्रकार कर्मयोग तथा ज्ञानयोग भी सिद्ध कर लिया। साधनस्वरूप भक्तियोग को भी अविच्छिन्न निर्वाह लिया और मरते वक्त भगवान का ध्यान स्मरण न होकर यदि और किसी चीज का ध्यान स्मरण हो आया तो साधन स्वरूप भक्तियोग निष्ठ अधिकारी की मुक्ति नहीं होगी। जहाँ मन जावेगा वहीं उसको फिर जन्म लेना पड़ेगा। जैसे जड़भरत का मरते वक्त हरिण के बच्चे में मन हो जाने से फिर हरिण का बच्चा होना पड़ा। मरते वक्त जहाँ मन जायेगा साधन स्वरूप भक्तियोग के अवलम्ब से तरने की इच्छा रखने वाले अधिकारी का वहाँ अवश्य जन्म होगा। इसके प्रमाण में श्रीगीता में खुद भगवान श्रीमुख से आज्ञा करते हैं कि 'यं यं वापि स्मरन् भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम्। तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद्भाव भावितः।।' इस प्रकार साधन स्वरूप भक्तियोग की अनेक शर्ते जब अधिकारी सुनता है और बाद में शरणागति योग की सुगमता का प्रसंग श्रवण करता है। तब झट साधन भक्तियोग से भी उसका मन हट जाता है और शरणागति योग पर परिस्थिति हो जाती है। जैसे उपायान्तर निष्ठ अधिकारी का कब मोक्ष होगा इसका निश्चय नहीं है। जैसे कि :-

''अनेक जन्म संसिद्ध स्ततो याति परांगतिम्।''

अनेक जन्म भली भांति अपने साधनों से सिद्ध हो पायेगा। तब परमगति को जायगा। गीता के इस श्री मुख वचन के अनुसार यह निर्णय हुआ कि 'साधन भक्ति के भरोसे पर मोक्ष चाहने वाले अधिकारी का कब मोक्ष होगा इसका पक्का निश्चय नहीं है।

दूसरी बात यह है कि मन इन्द्रिय वश हुए बिना साधन स्वरूप कर्मयोग, ज्ञानयोग, भक्तियोग कभी सिद्ध होता ही नहीं है। जैसे कि गीताजी में भगवान का श्रीमुख वचन है कि- ''असंयतात्मना योगो दुष्प्राप इति मे मतिः'' इसका अर्थ पहले ही कह चुके हैं।

तीसरी बात यह है कि साधनस्वरूप भक्तियोग निष्ठ अधिकारी के बावत शुकदेव मुनि का वचन है कि जब उसका अन्त समय आवे तो चाहिए कि कहीं एकान्त पवित्र स्थान में चला जावे और देह से तथा देह के सम्बन्धियों से चित्त हटा देवे। ऐसा यदि न करे तो उसका साधन बिगड़ जावेगा। जैसा कि नीचे के श्लोक में कहा गया है :-

अन्तकालेतु पुरुष आगते गत साध्वसः।
कुर्यादसङ्ग शस्त्रेण स्पृहां देहेऽनु ये चतम्।।

चौथी बात यह है कि उपायान्तर निष्ठ अधिकारी के प्रति शास्त्रों का ऐसा कहना है कि भले ही अन्त समय में वह एकान्त में भी चला गया, सब सुसाधनों का संयोग भी उसको लग गया परन्तु यदि भगवान का स्मरण करता हुआ शरीर नहीं छोड़ेगा तो उसकी मुक्ति नहीं होगी। क्योंकि साधन भक्तियोग निष्ठ अधिकारी के प्रति गीताजी में भगवान का श्रीमुख वचन है कि :-

अन्तकालेतु मामेव स्मरन मुक्त्वा कलेवरम्।
यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमांगतिम्।।

जो उपायान्तर निष्ठ अधिकारी श्री भगवान का ही स्मरण करता हुआ शरीर त्याग करेगा उसीको परमगति होगी। यदि अन्त में भगवान का स्मरण न होकर किसी और चीज का स्मरण हो गया तो जिसका स्मरण होगा उसी जगह उस अधिकारी का फिर जन्म होगा। सब साधनों का योग होते हुए भी सर्वस्व स्त्री, पुत्र, कुटुम्ब, राज्यकोष विभूति त्याग कर एकान्त जंगल में निवास होते हुए भी सिर्फ एक भगवान के अन्तिम स्मृति के बिना हरिण बच्चे का स्मरण आ जाने के कारण इतने बड़े साधन निष्ठ अधिकारी को पुनः पशु योनि में जन्म लेना पड़ा।

पांचवी बात यह है कि प्रपत्ति शास्त्र की जो मीमांसा है उसका कहना है कि यदि जन्म जन्मान्तरों में घूणाक्षर न्याय से किसी काल में कदाचित साधन निष्ठ अधिकारी का अन्तिम भगवत् स्मृति सुधर जाय और वह परमपद में चला जाय तो भी वहाँ श्री भगवान का अन्तरंग कैंकर्य उसको नहीं मिलता है। क्योंकि वह अधिकारी साधन दशा में अपने को स्वतन्त्र कर्त्ता मानता रहा।

श्री देवराज गुरु कहते हैं कि हे मुमुक्षुओ! कहने का भाव यह है कि उपायान्तर कर्म, ज्ञान तथा भक्ति के सम्पादन में अनेक बड़ी-बड़ी अड़चनें हैं। अनेक भावुक महानुभाव अति लगन के साथ करने के पश्चात भी जब सफल नहीं हुए तो हम काल कर्म स्वभाव के सिकंचे में जकड़े हुए कलियुगी चेतन जिसके लिए कोई सुविधा नहीं इनको सम्यक करके इनके द्वारा श्री भगवच्चरण कमल प्राप्त करें, यह सर्वथा असम्भव है। इसके लिए अनेक सारतम शास्त्र के प्रमाण भी दिये गये और इसी शरीर से भगवत्प्राप्ति भी होनी चाहिए। क्योंकि भगवान की परम निर्हेतुक दया से प्राप्त देवदुर्लभ मानव जीवन का बार-बार मिलना अति कठिन है। इस शास्त्रीय वचन के अनुकूल कि (कीटेषु जन्म शतकोटिषु मानुषत्वम्) कीटादि योनियों में करोड़ों बार भ्रमण करने के बाद भगवान की दया से मनुष्य शरीर प्राप्त होता है। एक बार स्टेशन से गाड़ी निकल जाने के बाद २४ घण्टा के बाद ही उस पर पुनः आती है। शरीर का भी यही क्रम है। शरीर छूटने बाद न जाने किन-किन योनियों में जाना पड़ेगा इसका निश्चय नहीं। हमें फिर यह कहकर न क्रन्दन करना पड़े कि हाय!

''मृतश्चाहं पुनर्जातः जातश्चाहं पुनर्मृत' मृत्यु के गाल में गया फिर माता के गर्भ में नव मास सड़कर बाहर आया इसी तरह अनेकानेक बार सहस्त्रों योनियों में मैं प्राप्त हो रहा हूँ , यह ध्यान रखना पड़ेगा। और इसीलिये आवागमन के भयानक, चक्र से भय भीत होकर जीव इस असार संसार सागर से पार होने की तीव्र त्वरा को लेकर, मोक्ष प्राप्ति हेतु कर्म ज्ञान, भक्ति को साधन स्वरूप स्वीकार कर परम पिता परमेश्वर की नित्य अन्तरंग कैंकर्य की प्राप्ति में जब अगाध कठिनाइयाँ देखता है तो उसे ईश्वर प्राप्ति के लिये अनन्य शरणागत ही बनना चाहिये। क्योंकि अनन्य शरणागति ही एक ऐसा उपाय है कि जिससे इस जन्म के बाद दूसरा जन्म नहीं हो सकता है, अतः अनन्य शरणागत बनकर ही रहना चाहिए।

श्री मदनन्त श्री जगद्गुरु भगवद्रामानुज संरक्षित विशिष्टा दूत सिद्धान्त प्रवर्तकाचार्य श्रीश्री 1008 श्रीस्वामीजी सीतारामाचार्यजी महाराज कृत शरणागति मीमांसा षष्टम खण्ड समाप्त

इति

भजन

(राग - भूपावली)

प्रभु के शरणागत होना, दिव्य वैकुण्ठ नगर जाना। टेर।।

प्रभु एक श्रीमन्नारायण सब ही जग के मांय।
इनही के शरणागत होकर भव-सागर तर जाय।।
सदा हरि भक्तन में रहना, प्रभु के शरणागत होना। टे।

देव मात्र श्रीपति के सवही, दास भूत जग मांय।
श्रीपति के शरणागत जन पर प्रेम करत सुख पाय।।
किसी से कबहु नहिं डरना प्रभु के शरणागत होना। टे।

श्री वैकुण्ठ नगर अति सुन्दर, रत्न जड़ित सब काम।
महल मकान सभी कंचन के नित्य मुक्त के धाम।।
सदा श्रीपति के संग रहना, प्रभु के शरणागत होना। टे।

श्री रामानुज की कृपा से मिलत दास को ज्ञान।
इनही की कृपा से छूटत दम्भ, कपट, मद, मान।।
सदा इनही के गुण गाना, प्रभु के शरणागत होना। टे।

दुःख रूप संसार है, इसमें सुख सत संग।
श्रीवैष्णव को दास गात जस करो सदा सत संग।।
कभू नहिं काल वृथा खोना प्रभु के शरणागत होना। टे।

समाप्त

तिरुमल में दर्शनीय क्षेत्र

स्वामिपुष्करिणी : मंदिर के निकट स्थित यह तालाब अतिपवित्र है। यात्री मंदिर में प्रवेश करने के पूर्व इसमें स्नान करते हैं। आत्मा व शरीर की शुद्धि के लिए यहाँ स्नान करना श्रेष्ठ है।

आकाश गंगा : मंदिर की उत्तरी दिशा में लगभग ३ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

पापविनाशनम् : मंदिर की उत्तरी दिशा में ५ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

वैकुंठ तीर्थ : मंदिर की ईशान दिशा में लगभग ३ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

तुम्बुरु तीर्थ : मंदिर की उत्तरी दिशा में १६ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

भूगर्भ तोरण (शिलातोरण) : यह अपूर्व भूगर्भ शिलातोरण मंदिर की उत्तरी दिशा में १ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

ति.ति.दे. बगीचे : देवस्थान के आध्वर्य में सुंदर व आकर्षक बगीचे लगे हुए हैं, जिन में विशिष्ट पेड व पौधे मिलते हैं।

आस्थान मंडप (सदस हाल) : यहाँ धर्म प्रचार परिषद् के आध्वर्य में धार्मिक कार्यक्रम मनाया जाते हैं। जैसे भाषण, संगीत-गोष्ठी, हरिकथा-गान एवं भजन।

श्री वेंकटेश्वर ध्यान ज्ञान मंदिर (एस.वी. म्यूजियम्) : इस कलात्मक सुंदर भवन में एक म्यूजियम्, ध्यान केंद्र तथा छायाचित्र-प्रदर्शिनी आयोजित है।

ध्यान केंद्र : तिरुमल के एस.वी. म्यूजियम् एवं वैभवोत्सव मंडप में स्थित ध्यान केंद्रों में भगवान पर ध्यान केंद्रित कर भक्त शांति को प्राप्त कर सकते हैं।

के पुण्यकाल में लगातार माता दुर्गा की पूजा की। माता के आशीर्वाद से दसवें दिन उन्होंने रावण का वध किया। नवरात्रि के दौरान दुर्गा माता के अलग-अलग रूपों की आराधना वैदिक परंपरा के अनुसार की जाती है। इन नौ देवी के रूप, अस्त्र और वाहन आदि अलग-अलग होने पर भी ये सब आदिशक्ति दुर्गा के प्रतिरूप हैं।

माँ दुर्गा के नौ रूपों की वैभवता

- डॉ.एच.एन.गौरीराव, मोबाइल - 9742582000

शारदीय नवरात्रि के विशेष अवसर पर जानेंगे आदिशक्ति दुर्गा के नौं स्वरूपों की अपार शक्ति तथा वैभवता और महत्व के बारे में।

बुराई पर अच्छाई की विजय के प्रतीक के रूप में नवरात्रि तथा विजयदशमी का आचरण धूम-दाम से अश्विन मास में मनाया जाता हैं। इस मास की पूर्णिमा अश्विनी नक्षत्र से युक्त होने से यह आश्वयुज मास कहलाता है। सनातन काल से ही अश्विन मास का महत्व है, क्योंकि इस मास में पितरों तथा देवी देवताओं की पूजा की जाती है, जिससे उनके विशेष आशीर्वाद प्राप्त होता है। विश्वास किया जाता हैं कि शारदीय नवरात्रि के पवित्र समय में माँ दुर्गा पृथ्वी पर भ्रमण करती हैं। इससे अश्विनी मास को माँ दुर्गा का मास भी कहा जाता है। इन पावन दिनों में जो भी माता की उपासना निष्ठा और विधि-विधान के साथ करता है, उसके सभी मनोभीष्ट पूर्ण हो जाते हैं। भगवान श्रीराम ने अश्विन में नवरात्रि

१. शैलपुत्री - माता दुर्गा का पहला शक्ति रूप शैलपुत्री है। नवरात्रि में प्रथम तिथि को इन्हीं की उपासना की जाती है। पर्वतराज हिमालय की पुत्री होने के कारण इनका नाम शैलपुत्री पड़ा। शिव पुराण के अनुसार दक्ष की पुत्री और शंकर की पत्नी सती अपने अपमान को न सहते हुए यागाग्नि में भस्म हो गई। दूसरे जन्म में उन्होंने हिमालय की पुत्री बनकर तपस्या करके फिर से शंकर को प्राप्त किया। वृषभारूढ देवी दाहिने हाथ में त्रिसूल और बाएँ हाथ में कमल को धारण करती हैं। पहले दिन माँ की पूजा के बाद गाय के घी को अर्पित करने से

माँ प्रसन्न हो जाती है। माँ की कृपा से साधक में दिव्य चेतना का संचार होता है।

२. ब्रह्मचारिणी - नवरात्रि में दूसरे दिन माता ब्रह्मचारिणी की आराधना की जाती है। इस रूप में माता ने भगवान शंकर को पति के रूप में पाने के लिए घोर तपस्या की थी। इससे वे 'ब्रह्मचारिणी' कहलाई। ब्रह्मचारिणी का अर्थ तपस्या करने वाली है। तपस्या के कारण से माँ दुर्गा का ज्योतिर्मय रूप दिखाई

पड़ता है। इनके दाहिने हाथ में माला तथा बाएँ हाथ में कमंडल है। इस दिन माता को शक्कर का भोग लगाया जाता है। माँ की उपासना से वैराग्य तथा संयम की भावनाएँ उत्पन्न होती हैं।

३. चंद्रघंटा - नवदुर्गा का तीसरे शक्ति रूप है चंद्रघंटा। नवरात्रि की तीसरे तिथि को चंद्रघंटा माता की पूजा की जाती है। माता के मस्तक में घंटे आकार का अर्धचंद्र है। इसीलिए देवी का नाम 'चंद्रघंटा' पड़ा। देवी माँ सोने की तरह तेजोमयी है। माँ के दस हाथों में धनुष, बाण, तलवार, त्रिशूल, गदा जैसे अस्त्र और कमंडल तथा कमल से विभूषित है। माता के घंटे की ध्वनि से नकारात्मक तथा असुरी शक्तियाँ मिट जाती है। इस दिन पूजा के बाद माता को गाय के दूध से बनी मिठाई को अर्पित किया जाता है, जिससे भक्तों के सांसारिक कष्ट दूर हो जाते हैं। योग साधक को माता की कृपा से अनेक सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं।

४. कूष्माण्डा - नवरात्रि के चौथे दिन माता कूष्मांडा की पूजा की जाती है। जब ब्रह्मांड अंधकार में था तब माता ने अपनी मनोहर हंसी से बीज रूप में ब्रह्मांड की रचना की। इसी से माता को 'कुष्मांडा' नाम पड़ा। एक और कथन के अनुसार देवी माँ को कुम्हाडे की बलि अति प्रिय है। कुम्हड़ा (कुष्मांड) के कारण माँ 'कुष्मांडा' भी कहलाई हैं। देवी की आठ भुजाएँ है। इससे वह 'अष्टभुजा' कहलाई। हाथों में धनुष, बाण,

कमंडल, कमल, अमृत कलश, चक्र, गदा से सुसज्जित है। सब सिद्धियोंवाली जपमाला आठवें हाथ में है। माता सूर्यमंडल के भीतर लोक में रहने से सूर्य के समान प्रकाशमय है। माता की निष्टा से पूजा करने से व्याधियों से मुक्ति मिलती है। पूजा के बाद मालपुआ का भोग लगाया जाता है। माता की पूजा से बुद्धि का विकास और विवेचना शक्ति बढ़ती है।

५. **स्कंदमाता -** माँ दुर्गा का पाँचवा शक्ति रूप स्कंदमाता है, जिसकी पूजा नवरात्रि के पाँचवे दिन की जाती है। माता की चार भुजाएँ है। दो भुजाओं में कमल है, बाई तरफ भुजा वरद मुद्रा में है। माता अपनी दाई भुजा से बालरूप स्कंद को गोद में पकड़ी हुई हैं। इससे माता 'स्कंदमाता' कहलाई। स्कंदमाता कमलासना है, माता वात्सल्य मूर्ति है, संतान प्राप्ति हेतु माता की पूजा की जाती है। इस दिन उपवास के बाद माता की पूजा करके केले का भोग लगाया जाता है। माता की कृपा से मोक्ष के द्वार खोले जाते है। भक्तों की समस्त इच्छाओं को पूर्ण करनेवाली है स्कंदमाता।

६. **कात्यायनी -** नवरात्रि के छठवें दिन माता कात्यायनी की उपासना की जाती है। कात्यायन ऋषि ने एक पुत्री की प्राप्ति के लिए माँ भगवती की उपासना तथा कठिन तपस्या की थी। माँ भगवती ने स्वयं उसके घर में जन्म लिया। इससे देवी कात्यायनी कहलाई। माँ की पूजा सबसे पहले कात्यायन ऋषि ने की थी। इनकी चार भुजाएँ हैं। एक हाथ वरद मुद्रा में है तो दूसरा हाथ अभय मुद्रा में है। तीसरे हाथ से तलवार को तथा चौथे हाथ से कमल को पकड़ी हुई हैं। माँ की शक्ति अपार है। कात्यायनी माता ने महिषासुर का वध किया था। कहाँ जाता है कि द्वापरयुग में गोपिकाएँ श्रीकृष्ण को पति के रूप में पाने के लिए माता कात्यायनी की पूजा की थी। नवरात्रि में कात्यायनी माता की पूजा के बाद शहद को समर्पित किया जाता हैं। माता की पूजा से शत्रु भय से मुक्त होकर सुखमय जीवन बिता सकते हैं।

७. **कालरात्रि -** दुर्गा माता की सातवीं शक्ति कालरात्रि है, जिनकी पूजा नवरात्रि के सातवें दिन की जाती है। माँ का स्वरूप रौद्र होता है। रक्तबीजासुर के संहार के लिए माता ने इस भयंकर रूप को धारण किया था। शरीर का रंग घना काला है, सिर के बाल बिखरे हुए हैं, देवी के तीन नेत्र है जो गोलाकार में है और इनकी सांसो से अग्नि निकलती है, गर्दभ पर सवार करती है, एक हाथ से भक्तों को अभय देती है तो दूसरे हाथ से वर प्रदान करती है। बायीं तरफ के ऊपर वाले हाथ में लोहे का काँटा तथा नीचे वाले हाथ में खड्ग है। माता

की उपासना से ब्रह्मांड के द्वार खोले जाते हैं। इससे योग साधक को ब्रह्मांड की सिद्धियाँ माँ का जप करने से मिलती है। माँ का रूप भयंकर होने पर भी भक्तों को शुभ करनेवाली है। इस दिन माता को पूजा के बाद गुड़ का भोग लगाया जाता है। समस्त असुरी शक्तियाँ माता की भक्ति से मिट जाती हैं। इससे भक्त निडर हो जाता है।

८. महागौरी - नवरात्रि के आठवीं तिथि को महागौरी की पूजा की जाती है। नाम के अनुरूप यह देवी गौर वर्ण शरीरवाली है। जब गौरी माता की उत्पत्ति हुई तब वह ८ वर्ष की आयु की थी। इस देवी के सभी आभूषण और वस्त्र सफेद वर्ण में है। माता की चार भुजाएँ है। दो हाथों में डमरु और त्रिशूल है। अभय मुद्रा में एक हाथ तथा एक और हाथ वरद मुद्रा में है। भगवान शंकर की तपस्या करते समय माँ का शरीर काला वर्ण हो चुका था। परंतु शंकर की कृपा से फिर से कांतिमय बना। माता को इस दिन नारियल का भोग समर्पित किया जाता है। माँ के सामने नतमस्तक होने से भक्तों के समस्त पाप मिट जाते है और वांछित फल प्राप्त होते हैं।

९. सिद्धिदात्री - सिद्धिदात्री की पूजा नवरात्रि के नवमी के दिन की जाती है। मोक्ष और सिद्धि को प्राप्त कराने वाली माता 'सिद्धिदात्री' कहलाई। नवदुर्गाओं में सिद्धिदात्री अंतिम माता हैं। माँ कमलासन पर विराजमान है। इनके चार हाथ है। हाथों में कमल, शंख, गदा और सुदर्शन चक्र को धारण किए है। माता सिद्धिदात्री सरस्वती का प्रतिरूप भी मानी जाती है। निष्ठा से माता की उपासना करने से सभी सिद्धियाँ प्राप्त होती है। कहा जाता है कि भगवान शंकर ने भी सिद्धिदात्री माता की कृपा से सिद्धियाँ प्राप्त की थी। नवमी तिथि को माता की उपासना करने के बाद तिल का भोग लगाया जाता है। सिद्धिदात्री की उपासना से नवरात्रि में नवदुर्गा पूजा का आचरण पूर्ण हो जाता है। इनकी कृपा से दुःख मिटकर सारे सुखों को प्राप्त करके परलोक में मोक्ष को प्राप्त किया जा सकता है।

नवरात्रि के आचरण की वैज्ञानिकता - शारदीय नवरात्रि के आचरण में कोई अंधविश्वास नहीं है। नवरात्रि के आचरण में धार्मिक तथा दार्शनिक महत्व के अलावा वैज्ञानिक पक्ष भी है। शारदीय नवरात्रि के इस संधिकाल में मनुष्य में रोगों से लड़ने की प्रतिरोधक शक्ति कम होने से स्वास्थ्य बिगड़ता है। स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए हमें कुछ नियमों का पालन करना चाहिए। इस समय सात्विक आहार लेना या उपवास रखना उत्तम है। नौ दिनों तक लगातार उपवास रखने से हमारे शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। इतना ही नहीं नवरात्रि के समय किए जाने वाले पूजा, हवन, जप और प्रार्थना आदि से वातावरण शुद्ध होने के अलावा सकारात्मक शक्ति जागृत होकर मन और चित्त की शुद्धि होती है।

तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर

(तिरुपति बालाजी)

हिन्दी अनुवाद - प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव
प्रो.गोपाल शर्मा

एक दिन अकस्मात तपस्या में लीन सभी ने मेघ गर्जन सम गंभीर ध्वनि सुनी। उन्होंने आकाश पर चारों ओर दृष्टि दौडाई। इतने में चकाचौंध करनेवाली बिजली कौंध गयी। तपस्वियों की आँखें उस प्रकाश को सहन नहीं कर पायीं। सबने आँखें मूँद लीं। इतना होने पर भी उन्होंने अपनी तपस्या जारी रखी। उस प्रकाश के मध्य एक दिव्य विमान (दिव्य मंदिर) दिखाई दिया। वह अनगिनत मंदिर शिखरों (गोपुर) के बीच था। अनेक प्राकारों से विलसित था। कनकमय द्वार थे। मणि-माणिक्यों से विभूषित वंदनवारों से, तोरणों से, गोपुरों (कलषों) से विलसित था। गोपुर शिखर स्वर्णकलशों से विराजमान था। विमान के आँगन में सामने ही अमूल्य वज्रों से शोभित क्रीडा-मंडप था। क्रीडा-मंडप के मध्य आस्थान मंडप विलसित था। आस्थान मंडप के खंभों पर रत्न जडे हुए थे। उसके चार दरवाजे (द्वार) द्वारपालकों से परिरक्षित थे। उसमें एक मणि-मंडप भी था। समस्त स्वर्ण स्तंभों से विराजमान यह मंडप अत्यंत पवित्र तथा अत्यंत प्रभावशाली लग रहा था। उस प्रकाश के बीच एक रथ-यात्रा दिखी। वह रथ अश्व चालित था। गज, वृषभ आदि जंतु तथा मधुर ध्वनियों को निसृत करनेवाला पक्षी वृन्द रथ-यात्रा को और शोभित कर रहे थे। भेरी नाद चारों दिशाओं को अपना बना रहा था। सुंदर नदियाँ नमन करती और हाथों को उठाकर हिलाती अपनी भक्ति भावनाओं को व्यक्त करती दिखाई दे रही थीं। कुछ भद्र महिलाएँ कर्पूर नीराजन अर्पित कर रही थीं। कुछ स्त्रियाँ अपने नृत्य-गान से वातावरण को और आकर्षक बना रही थीं। दृश्य परम अद्‌भुत और भक्ति युक्त था।

दिव्य और भव्य दृश्य का दर्शन पाकर ब्रह्म, अन्य देवता सनक, अगस्त्य, योगियों और मुनियों का वृन्द सभी स्तब्ध रह गये। उनको पता ही नहीं चला कि आँखों के सामने क्या हो रहा है और उन्हें क्या करना है। उस प्रभाव से सबसे पहले ब्रह्म सचेत हुए। सबको उन्होंने प्रकृतिस्थ किया। तब जाकर ब्रह्म ने कहा- ''हे भक्तगण! लगता है कि यह विमान भगवान विष्णु का ही विमान है। यह वैकुण्ठ से ही आया है। आप सब मेरे साथ उसमें प्रवेश कीजिए। उसको सही दृष्टियों से देखते हुए दर्शन लाभ प्राप्त करेंगे।'' दशरथ ने भी उनका अनुसरण किया। मुखद्वार पर उनको द्वार पालक मिले। वे थे चण्ड और प्रचण्ड। वे दोनों शंख-चक्रधारी थे। ब्रह्म आदि को उन्होंने नमस्कार किया। वे सभी आगे बढे। विमान तक पहुँचने के लिए उन्हें सात द्वारों को पार करना है। सबसे होकर अन्ततः वे विमान में पहुँचे।

विमान के मध्य नील घनश्याम विष्णु को पाया। विष्णु भगवान के दक्षिण पार्श्व में श्रीलक्ष्मी और वाम पार्श्व में भूदेवी विराजमान थीं। वे विमल नेत्रों से भगवान विष्णु को देख रही थीं। विष्णु और उनकी देवियों के सिरों पर देदीप्यमान मुकुट शोभित थे। भगवान के कानों में मकर-कुण्डल शरीर पर (ब्रह्मसूत्र) यज्ञोपवीत, कंठ में सुवर्ण कण्ठहार, छोटी-छोटी घंटिकाओं से युक्त सोने की म्यान में खड्ग और मंजीर नूपुर (पायल) चरणों में विराजमान थे। सहस्र कांतियों को बिखेरनेवाला सुदर्शन चक्र उनके दक्षिण हस्त में तथा पांचजन्य शंख वाम हस्त में प्रकाशमान थे। चतुर्भुजी स्वामी का एक और दक्षिण हस्त तो चरणों की ओर संकेत करता है, वरद मुद्रा में और एक हस्त विशिष्ट अभय सूचक मुद्रा में थे। कटि पर धरा हाथ यह सूचित करता है कि भक्तों का जीवन सागर कटि तक ही डुबो सकता है।

(भगवान विष्णु के दिव्य-विमान में उक्त स्वरूप-विवरण में उद्धृत लक्षण आज की मूलविराट मूर्ति में भी ज्यों का त्यों हैं। भगवान का राजसी रूप उनके आखेट गमन (पारुवेटा) उत्सव में स्पष्ट झलकता है। कुछ संदर्भों में विशेषकर 'पूलंगि-सेवा' (फूलों से सेवा) नामक विशेष सेवा में वे तो वैभव मूर्ति लगते हैं। कुछ विशेष संदर्भों में उनका क्रोधी भयानक रूप भी गोचरित होता है।)

भगवान भक्तों को हमेशा सुंदर दिव्य वदन से भासित दर्शन ही देते हैं। उनकी करुणापूर्ण दृष्टियाँ और आकर्षक दिव्य रूप भक्तों पर दया, करुणा, शालीनता, क्षमा आदि बरसानेवाले ही हैं। आदि और अंत रहित (आद्यंत रहित) नारायण अव्ययी (कभी क्षत नहीं होनेवाला) और पुरुषोत्तम हैं। महर्षियों और मुनियों (तपोधन) ने भगवान के उक्त दिव्य रूप का दर्शन लिया। अपने आपको भूलकर, दिव्य अनुभूति से ओतप्रोत होकर हर्षातिरेक में आनंदाश्रु बरसाते हुए नृत्य करने लगे। सभी विष्णु दर्शन से प्रशान्त मन हुए।

अगस्त्य और महर्षियों ने भगवान की प्रशंसा की। उन्होंने कहा- ''हे यज्ञरूपा! हे यज्ञभोक्ता! हे यज्ञ फल प्रदाता! हे यज्ञ रक्षक! आपको शत-शत नमन। (रामावतार में आपने राक्षसों का संहार कर विश्वामित्र के महायज्ञ की रक्षा की है।) आप यज्ञ, श्राद्ध, दान आदि मानवोचित धार्मिक कर्मों के रक्षक हैं। आप अपने ही भक्तों की रक्षा ही नहीं बल्कि अन्य देवताओं के भक्तों की रक्षा का भार भी वहन करते हैं। यह इसलिए कि आप सब में हैं और सब की कामनाएँ पूरा करते हैं। यह निश्चित भी है कि आप विश्वव्यापी हैं। आपके स्मरण और आपको संतुष्ट किये बिना कोई भी धार्मिक कार्य पूरा हो नहीं सकता। आरंभ अथवा अंत में या बीच में ही सही, अवश्य आपकी अर्चना-पूजा करनी ही है। तभी समस्त मानव के कार्य-कलाप और धार्मिक कृत्य सफल माने जाते हैं। सभी कार्य सफल भी तभी होते हैं। भक्तों द्वारा संपन्न यज्ञ, पूजाओं, जपों आदि द्वारा संतुष्ट होकर आप सब पुरुषार्थ उन्हें प्रदान करते हैं। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष नामक पुरुषार्थ प्राप्त कर भक्त जीवन्मुक्त होते हैं। ये सब धार्मिक कार्य और यज्ञ, आपके आदेश से ही वेदों में निर्देशित हुए हैं। हम सब इन्हें आपकी सेवा मानकर ही संपन्न करते हैं। हम अपने आप इन्हें समर्थ और सूक्ष्म रूप में पूरा नहीं कर सकते। उन्हें संपन्न करने के लिए हम आप की प्रार्थना करते हैं। आपकी कृपा के अभाव में उनको निभाते समय जो भूलें

होती हैं उनसे आप ही भक्तों की रक्षा करते हैं। आप उदारतापूर्वक क्षमा करते हैं।''

इसके बाद इन्द्र और अन्य देवता समूह ने मिलकर श्री महाविष्णु से निवेदन किया- ''हे वेंकटाचलपति! हे शेषाद्रिवास! हे सिंहाचलवासी! हे श्रीमन्नारायण! हे वासुदेव! हमारे विनम्र प्रणाम स्वीकार कीजिए। असीम कृपा से आपने पाताल से पृथ्वी को उभारकर पुनःस्थापित किया है। इतना ही नहीं इसके बाद आपने मानव समूह की रक्षा के लिए इस पर्वत पर रहने का निर्णय भी लिया। क्षीरसागर मंथन के समय आपने अमूल्य सहयोग दिया है। उससे निकले अमृत को बहुत ही सावधानी से देवताओं में बाँटा है। फलस्वरूप देवताओं की रक्षा भी हुई। आप आकांक्षा रहित हैं। आप अपने लिए कुछ चाहते नहीं हैं। आपके सब कार्य भक्तहित के लिए ही घटित होते हैं। अपने रूप को समय की माँग के अनुसार परिवर्तित करते हैं। कभी आप सहस्रशीर्ष, सहस्राक्ष और सहस्रहस्त हो विश्वरूप धारण करते हैं तो कभी दो ही हाथों से युक्त होकर शोभावान मानव बनते हैं। कभी आप निराकार भासित होते हैं और केवल ज्ञान नेत्र गोचरित हो विराजते हैं। ऋषि-मुनि इसीलिए आपको निर्गुण के रूप में स्वीकार कर आपका ध्यान करते हैं। आपका सगुण रूप भी उनको उतना ही आकर्षक होता है। भक्तों के लिए सगुण रूप ही अधिक मान्य ठहरता है, जबकि ज्ञानियों को निर्गुण रूप। वेदांती तो आपके सत्, चित् और आनन्द स्वरूप की आराधना करते हैं। आप दिव्य पुरुष और दिव्य शरीर से युक्त हैं। उपासना के लिए आपका दिव्य रूप सभी के लिए स्वीकार्य भी है। सब आपकी पूजा-अर्चना इसी स्वरूप को मानकर करते हैं।''

इसके बाद सनकादि मुनियों की बारी आयी। उन्होंने भगवान को संबोधित कर प्रार्थना स्वर में कहा- ''हे महाविष्णु! हे वैकुण्ठवासी! आप विश्व के सृष्टिकर्ता हैं। आप विश्वरूपा हैं। फिर भी आप किसी से भी प्रभावित नहीं हैं। आपको हमारे नमन! समाधि की स्थिति में हम आपको आधार-षट्चक्रों के बल पर अनुभूत करते हैं, सुषुम्ना नाडी से, केवल बुद्धि से ही ग्रहणीय होता है, प्राप्त करते हैं हम आप को। आप अरूपा और स्वयंप्रकाश रूपा हैं। हमारे हृदय कमलों में आपको बिठाकर साधना रत होते हैं। आप नीलकमल, पीतांबरधारी, अच्युत, वेदवेद्य हैं। फिर भी वेदों द्वारा आप विविध रूपा घोषित हैं- 'वेदस्य अविधयम्।'

सनकादियों की प्रार्थना के बाद कोसल देश के राजा दशरथ ने भगवान से निवेदन किया- ''रमापति! रमा (लक्ष्मीदेवी), जिनकी कृपा पाने के लिए ब्रह्म, इन्द्र और समस्त देवता समूह आराधना करते हैं, आपकी कृपा चाहती है। आपके आयुध ने ही त्रिपुरासुर संहार के संदर्भ में त्रिपुरारी (शिव) को सहायता पहुँचायी है। असुर के तीन पुरों का नाश भी तभी संभव हो पाया था। ब्रह्म और अन्य देवताओं की सृष्टि आपने ही की है। उनके सृजन से ही विश्व सृजन हो पाया है। उनको इस कार्य में आपने ही नियोजित किया है, प्रभू! वे सब आपके आदेशानुसार ही विश्व की गति को नियंत्रित करते हैं। आपका वास स्थल वैकुण्ठ मात्र उनकी परिसीमा में नहीं रहता है। यह विश्व में घटित परिणामों से हमेशा मुक्त रहता है। मैं, अकिंचन, आपके सत्य स्वरूप को कैसे समझ पाऊँगा?''

अंततः चतुर्मुख ब्रह्म, जिनके चारों मुँह वेदोच्चारण से स्वयं सुगंधित हैं, विष्णु भगवान से कहने लगे- ''हे भगवान! वेद घोषित करते हैं कि इस जगत की सृष्टि से पहले केवल 'सत्' था। पदार्थ उसी रूप में समा था। आप सत् स्वरूप हैं, हे नारायण! उस 'सत्' से ही जल का उद्भव हुआ। जल में जीवन शक्ति भरी गयी। उससे द्रव बना। द्रव से अंड और अंड से मेरा जन्म हुआ है। तत्पश्चात आपके दिव्य आदेश तथा समुचित परामर्श पाकर ही मैंने सृष्टि कार्य संपन्न किया है। आप की प्रेरणा के बिना सृष्टि संभव नहीं हुई होती। अतः आप ही एक मात्र सृष्टिकर्ता हैं। मुझे मालूम ही नहीं कि आपने मुझे जैसे कितने ब्रह्माओं का सृजन किया यह भी नहीं जानता कि मुझसे पहले आपने कितने ब्रह्माओं का सृजन किया है। आप चित् और अचित् स्वरूप हैं। जगत् में व्याप्त चित् (मानव और मानवेतर जीव) और अचित् (पदार्थ समूह) सब आप ही हैं। इस प्रकार आप विश्वरूपा हैं।''

क्रमशः

केदारगौरी व्रत की महिमा

- डॉ.के.सुधाकरराव
मोबाइल - 8328220365

केदारेश्वर व्रत का आचरण करने से भगवान शिवजी एवं पार्वती देवी की कृपा को प्राप्त कर सकते हैं। भक्तों का यह विश्वास है कि इस केदारगौरी व्रत के आचरण से जीवन में किसी भी चीज की कमी नहीं होगी। पार्वती ने इस व्रत को करके ईश्वर के अर्ध शरीर को प्राप्त किया। इस बात का उल्लेख हमें पुराणों में देखने को मिलता है।

इस व्रत में सबसे पहले हरिद्रा गणपति की पूजा होती है। हल्दी को गणपति मानकर पूजा करते हैं। उसके बाद षोडशोपचार पूजन, अंगपूजा की जाती है। उसके बाद अष्टोत्तर शतनाम पूजन, सूत्र ग्रन्थि पूजन संपन्न करते हैं। उसके बाद पुरोहित के द्वारा श्री केदारेश्वर व्रत कथा का श्रवण करते हैं।

केदारेश्वर की कथा

नैमिषारण्य की पावनभूमि में सूत ने शौनकादि मुनियों से कहा- ''मुनि श्रेष्ठों! भवसागर को पार कराने वाली केदारेश्वर की दिव्य कथा को मैं आप लोगों को सुनाना चाहता हूँ।''

एक बार शिव कैलास में पार्वती के साथ विराजमान थे। उनकी सभा में सिद्ध, साध्य, किंपुरुष, यक्ष-गन्धर्व आसीन हुए थें। सभी देवताओं ने शिवजी की स्तुति की। सभी ऋषिगण, अग्नि, वायु, वरुण, सूर्य, चन्द्र, ग्रह, नक्षत्र, प्रमथगण, गणेश, षण्मुख, वीरभद्र, नन्दीश्वर सभा में उपविष्ट थें। नारद, तुंबुर जैसे लोगों ने गायन के माध्यम से शिव की लीलाओं का वर्णन किया।

भृंगिरिटि का वृत्तांत

उस आनंदमय वातावरण में चारों तरफ सुंगध पुष्पों की सुगंध फैल गयी थी। भृंगिरिटि नामक एक भक्त ने उस समय शिवजी के सामने अद्भुत नाट्य का प्रदर्शन किया। उस नाट्य से प्रसन्न होकर शिवजी ने पार्वती को छोडकर, उठकर उस भक्त का अभिनंदन किया। अपने अमृत हस्तों से उसको आशीर्वाद दिया। तब क्रोधित पार्वती ने शिवाजी से कहा- ''हे नाथ! तुम्हारे भक्त ने सिर्फ तुम को ही नमस्कार किया। मुझे छोड दिया। क्या यह उचित है?''

तब पार्वती को पास बुलाकर शिवजी ने प्रेमपूर्वक कहा- 'हे देवी! योगियों को परमार्थ ज्ञान होता है। आप से कोई प्रयोजन नहीं है। ऐसा मानकर सिर्फ उस भक्त ने मुझे प्रणाम किया।'

तब पार्वती क्रोधित हो गई। महामाया स्वरूपिणी ने ईश्वर के समान योग्यता को प्राप्त करने के लिए तपस्या करने का निर्णय लिया। पार्वती ने कैलास छोडकर घन-घोर जंगल में प्रवेश किया। वह तरलतापूर्ण गौतम का आश्रम था।

आकस्मिक रूप से आई हुई पार्वती को गौतम एवं उनके शिष्यों ने आतिथ्य प्रदान किया। उन्होंने पूछा- ''देवी! आप कौन है? कहाँ से पधारी हैं?'' तब संतुष्ट हुई पार्वती ने कहा- ''हे ऋषिगण! इस पावन आश्रम में आप सभी तपःकार्य में निमग्न हैं। मैं हिमवत्पुत्री पार्वती हूँ। परमेश्वर की पत्नी हूँ। शिवजी के साथ समान रूप से मेरी भी पूजा हो! सम्मान हो। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए तपस्या करने यहाँ मैं आई हूँ। आप मुझे केदारेश्वर व्रत की जानकारी प्रदान करने की कृपा करें।''

तब गौतम मुनीन्द्र ने पार्वती को प्रणाम कर कहा- ''हे जगज्जननी! आप के आगमन से हमारा आश्रम पवित्र हो गया। अभी मैं आप को केदारेश्वर व्रत के बारे में जानकारी दे रहा हूँ। परिशुद्ध मन से करना हैं। सुबह ही स्नान कर निर्मल मन से 21 धागों की रक्षा का धारण करें। षोडशोपचार पूजन करना चाहिए। उसके बाद उपवास करें।

व्रत का विधान

पहले एक बाजोट पर लाल वस्त्र बिछाए। उस पर धान्य डालकर उसके ऊपर कलश की स्थापना करे। उस कलश पर 21 बार धागा (सूत्र) लपेटना चाहिए। उस कलश पर रेश्मी वस्त्र लपेट कर सुवर्ण के आभूषण से अलंकृत करे। नारियल को उसके ऊपर स्थापित करें। उस कलश में परिवार समेत शिव, पार्वतियों का आवाहन करे। धूप, दीप, गंध, अक्षत समर्पित करे। केदारेश्वर को नैवेद्य समर्पित करे।

''21 ब्राह्मणों को आमंत्रित कर उनके चरणों को धोकर पूजन करें। फल, तांबूल, दक्षिण - इत्यादि प्रदान कर उनको संतुष्ट करे। इस प्रकार केदारेश्वर व्रत का आचरण करने पर शिवजी की कृपा से अभीष्ट सिद्धि को प्राप्त कर सकते हैं।'' गौतम मुनि से व्रत का विधान सुनने के बाद पार्वती ने वहाँ से कैलास की ओर प्रस्थान किया।

चित्रांगद एक शिवभक्त गंधर्व था। नन्दिकेश्वर से उसने केदारेश्वर व्रत की महिमा को जान लिया। उसका प्रचार करने के लिए चित्रांगद ने भूलोक में उज्ञयिनी नगर पहुँचकर उस नगर के राजा वज्रदंत को व्रत की जानकारी दी। व्रत करने से राजा वज्रदन्त शिव की कृपा प्राप्त कर चक्रवर्ति बन गया।

उस उज्ञयिनी में एक वैश्य था। उसकी दो पुत्रियाँ थी। एक पुण्यवती, दूसरी भाग्यवती। पुत्रियों ने केदारेश्वर व्रत करने की इच्छा व्यक्त की। वैश्य ने कहा- ''मैं तो दरिद्र हूँ। पूजा सामग्री को प्रदान करने में असमर्थ हूँ।'' तब दोनों ने एक वटवृक्ष के निकट रक्षा हाथों में बांध कर, शिवजी का पूजन किया।

शिवजी ने वैश्य की पुत्रियों को सौन्दर्य, ऐश्वर्य प्रदान किया। बडी पुत्री पुण्यवती का विवाह उज्ञयिनी के राजा से हुआ, चोळ नरेश से छोटी भाग्यवती का विवाह संपन्न हुआ। वैश्य ने पुत्रों को प्राप्त कर धन-धान्य समृद्दि से सुखजीवन बिताने लगा।

कुछ समय के बाद केदारेश्वर व्रत का आचरण नहीं करने से भाग्यवती को दुर्भाग्य का सामना करना पड़ा। पति से निष्कासित भाग्यवती ने किसी व्याध के घर में प्रवेश किया। अपने बेटे को उज्ञयिनी महाराज की पत्नी पुण्यवती के पास भेजा। कुछ धन लाने के लिए। दो बार रास्ते में चोरों ने उसका धन हड़प लिया।

तब एक बार ईश्वर ने उस बच्चे को अन्तः-प्रेरणा प्रदान की। शिवजी ने बताया कि भाग्यवती ने केदारेश्वर व्रत त्याग दिया। इसलिए चोर के रूप में मैंने ही धन का अपहरण किया।

भाग्यवती के पुत्र ने अपनी बडी माँ पुण्यवती को सब कुछ बताया। उसने उस लड़के से केदारेश्वर व्रत कराया। पुनः पैसा देकर भेज दिया। उस दिन से भाग्यवती ने घर में केदारेश्वर व्रत का आचरण भक्ति के साथ करना शुरू किया।

''व्रत के परिणामस्वरूप भाग्यवती का पति ने सैन्य के साथ आकर, अपने पुत्र एवं पत्नी को रथ में बिठाकर राजधानी की ओर प्रस्थान किया!'' इस प्रकार सूत ने कथा सुनाकर अपना भाषण समाप्त किया।

इस व्रत के आचरण करने से सभी मनोरथों को प्राप्त कर सकते हैं। इस केदारेश्वर कथा का श्रवण करने मात्र से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। अतः इस व्रत का आचरण कर कोई भी भक्त अपने अभीष्ट को प्राप्त कर सकता है।

नीति पद्यम्

आन्ध्र देश के कबीर श्री वेमना

(संत वेमना की कुछ चुनी हुई रचनायें)

मूर्ख-पद्धति

वेर्रिवेषमुलनु वेसिको बोकुमु
कर्रिकुक्क तेक्कपु गादु सुम्मु।
पूर्रे लोनि गुणमु पूड्पिंप जनवले
विश्वदाभिरामा विनुर वेमा ।।१३।।

अरे मूर्ख, पागल की तरह व्यर्थ का वेष-धारण मत करो। काला कुत्ता कभी लाख साबुन लगाने पर भी सफेद बन सकता है? तुम्हारे दिमाग के अवगुण शरीर के साथ ही गाड दिये जाने पर याने मरने पर दूर हो जाते हैं।

नवंबर २०२२

०१ तिरुमल श्री बालाजी का पुष्पयाग
०५ कैशिकद्वादशी
१४ बाल दिवस
२०-२८ तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का ब्रह्मोत्सव
२१ श्री धन्वन्तरी जयंती
२४ तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का गजवाहन सेवा
२८ पंचमीतीर्थ
२९ तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का पुष्पयाग, सुब्रह्मण्य षष्ठी

(गतांक से)

श्री प्रपन्नामृतम्

(36वाँ अध्याय)

मूल लेखक - श्री स्वामी रामनारायणाचार्यजी

प्रेषक - श्री रघुनाथदास रान्दड

मोबाइल - 9900926773

श्रीरामानुजाचार्य की तीर्थ यात्रा

भक्ताधीन भगवान श्रीजगन्नाथ ने मन में विचार किया कि मेरा परमभक्त रामानुजाचार्य, महात्मा एवं दृढ़व्रती है और यह निश्चय ही वर्तमान पूजा पद्धति में सुधारकर उसे पांचरात्रागम शास्त्रानुसार बनाना चाहता है। अतः यह अपने ज्ञान के द्वारा ऐसा अवश्य करेगा और इससे मेरे आश्रित ये दीन-हीन पुजारी वृत्तिहीन होकर कष्ट भोगेंगे। यह विचारकर भगवान ने यतिराज श्री रामानुजाचार्य को उसी रात्रि में अपनी योग-माया के द्वारा जगन्नाथपुरी से सुदूर श्रीकूर्मस्थल नामक क्षेत्र में पहुँचा दिया।

प्रातःकाल श्रीहरि का नाम स्मरण करते हुए जब यतिराज उठे, तो देखा कि यह जगन्नाथपुरी तो नहीं है। फिर जब दिशाओं का अवलोकन किया और स्थानीय स्थापत्यादि को देखा तो ज्ञात हुआ कि यह तो श्रीकूर्म क्षेत्र है। यह देखकर यतिराज अत्यन्त विस्मित हुए और यहाँ पर एक दिन का उपवास किया। उस समय आपके पास पूजा के लिए भगवान विष्णु की मूर्ति एवं तिलक करने के लिए श्वेत मृत्तिका भी नहीं थी और भगवत् पूजा के बिना भोजन करना अनुचित था। भगवान श्रीकूर्मनायक अपने क्षेत्र में अपने परम भक्त के इस अनुष्ठान को देखकर प्रसन्न हुए और स्वप्न में आकर यतिराज से बोले- ''शंख, चक्र, गदा आदि धारण करने वाला मैं भगवान विष्णु यहाँ स्वरूपानुरूप निवास करता हूँ और मेरे मन्दिर के सन्मुख शुद्ध श्वेत मृत्तिका पड़ी हुई। अतः हे मेरे परमप्रिय भक्त यतिराज रामानुज! उठो, और भक्ति सहित ऊर्ध्वपुण्ड्र, तिलक धारण करके मेरी आराधना करके नैवेद्य समर्पित करो और भगवत् प्रसाद ग्रहण करके अपने उपवास का त्याग करो।'' इसके बाद भगवान फिर बोले कि- ''पुत्र! कुछ दिन यहाँ निवास करके यहाँ का मंगलाशासन करो। तुम्हारे जितने व्यक्ति श्री जगन्नाथपुरी में रह गये हैं, वे सभी कुछ दिनों में भगवान जगन्नाथ की कृपा से यहाँ पहुँच जायेंगे। मैंने तो पहले ही आदरपूर्व दोनों विभूतियों को तुम्हारे आधीन कर दी हैं।'' स्वप्न से उठकर यतिराज ने श्रीकूर्म नामक भगवान के आदेशानुसार नित्य कर्म पूजनादि कर्म कर भगवत्प्रसाद (भोजन) पाकर उनके चरणों के समीप ही

निवास किया। इस प्रकार यतिराज के यहाँ पधारने से सर्वत्र यह प्रसिद्ध हो गया कि यह परम पवित्र श्रीकूर्मक्षेत्र भगवान श्री विष्णु का स्थल है। यहाँ निवास करने वाले सभी मनुष्यों ने अपने पुत्र-स्त्री आदि सभी के साथ यतिराज श्री रामानुजाचार्य की शरणागति की और उनको आचार्य बनाया।

श्रीकूर्माचल क्षेत्र एवं श्री जगन्नाथपुरी तथा अन्य सभी स्थानों में उपरोक्त वृत्तान्त जब लोगों ने सुना तो अनेकों प्रान्तों में निवास करने वाले असंख्य लोगों ने यहाँ आकर भगवान श्रीकूर्मनायक के दर्शन कर यतिराज का शिष्यत्व स्वीकार किया। श्री जगन्नाथपुरी में जो आपके शिष्य रह गये थे, वे भी भगवत् प्रेरणा से शीघ्र ही यहाँ आ गये, और उनके साथ यतिराज यहाँ पर कुछ दिन और रहे। एक दिन भगवान की प्रेरणा से आपने यहाँ से सिंहाचल के लिए प्रस्थान किया। सिंहाचल में पहुँच कर शिष्य समुदाय सहित भगवान श्रीनृसिंहजी को प्रणाम कर, वहाँ गरुड़गिरि, अहोबल क्षेत्र में आये। यहाँ भी भगवान श्री लक्ष्मीनृसिंह को प्रणाम करके वेंकटाचल पर्वत पर पधारे।

उस समय वेंकटाचल पर निवास करने वाले श्री वेंकटेश भगवान के सम्बन्ध में बहुत कलह चल रहा था। कुछ लोग आक्रमण के द्वारा भगवान को शंख-चक्र रहित कर उनको कार्तिकेय मानकर पूजन कर रहे थे और श्रीवैष्णव लोग भगवान श्रीविष्णु के रूप में उनकी आराधना कर रहे थे। इसके लिये दोनों पक्षों में भीषण कलह हो रहा था। ऐसे समय में यतिराज श्री रामानुजाचार्य का यहाँ पदार्पण हुआ और उन्होंने कलहकारियों को सम्बोधन करके कहा- ''आप लोग अपने देवता स्कन्द के अनन्य चिह्न त्रिशूल, डमरू आदि-एवं हमलोग भगवान श्री विष्णु के अनन्य आयुध शंख, चक्र, गदा, पद्मादि का निर्माण कराकर, भगवान के सन्मुख रख दें, और मन्दिर के कपाट बन्द कर दें। यदि विष्णु के आयुध भगवान ग्रहण कर लेंगे तो श्री वेंकटेश्वर विष्णु हैं, और शैव चिह्नों को धारण कर लेंगे तो भगवान कार्तिकेय है। अपना निर्णय भगवान को स्वयं करने दें। इस प्रकार कलह करके एवं समय और शक्ति का अपव्यय करके लोक निन्दित क्यों हो रहे हों।'' दोनों पक्ष आपके इस निर्णय से सहमत हो गये और आपने भगवान श्रीविष्णु के आयुध शंख-चक्रादि और शैवों ने भगवान श्रीशंकर के आयुध डमरू-त्रिशूल आदि भगवान के मण्डप में रखकर किवाड़ अच्छी तरह से बन्द करा दिये।

प्रातःकाल जब उभय पक्ष के सन्मुख मंदिर को खोला गया तो सभी ने देखा कि- श्री वेंकटेश भगवान शंख, चक्र धारण किये हुए हैं और त्रिशूल, डमरू भगवान के चरणों के नीचे पड़े हैं। यह देखकर श्रीवैष्णव लोग बड़े प्रसन्न हुए और दूसरे लोग तत्काल ही वहाँ से लज्जित होकर पलायन कर गये। तदनन्तर यतिराज ने शंख, चक्र धारण करने वाले भगवान श्री वेंकटेशजी को प्रणाम कर भगवान के वक्षःस्थल पर स्वर्ण की लक्ष्मीजी की स्थापना की। इसके बाद ''यावच्चन्द्रदिवाकरौ'' आपका मंगल हो- ऐसा मंगलाशासन किया। यतिराज ने भगवान का मंगलाशासन करके अपनी पुत्री स्वरूपा उक्त स्वर्णलक्ष्मी उनको प्रदान की। इसलिये उन्होंने श्री वेंकटेश भगवान के श्वसुर एवं आचार्य रूप में प्रसिद्धि प्राप्त की। यहाँ से आप श्रीकंची पधारे और वहाँ श्री वरदराज भगवान को प्रणाम करके प्रस्थान कर मार्ग में मधुरान्तक एवं फिर वीरनारायणपुर में आकर श्री नाथमुनि स्वामी की श्रेष्ठ योगभूमि को प्रणाम कर श्रीरंगम आ गये।

इस प्रकार यतिराज श्री रामानुज स्वामी ने पुरातन पुण्य के महान फलस्वरूप भारत की प्रदक्षिणा की।

।।श्रीप्रपन्नामृत का ३६वाँ अध्याय पूर्ण हुआ।।

क्रमशः

गतांक से

श्री रामानुज नूट्रन्दादि

मूल - श्रीरंगामृत कवि विरचित

प्रेषक - श्री श्रीराम मालपाणी
मोबाइल - 9403727927

शार्न्ददेन् चिन्तै युन्ताळिणैक्कीळ्, अन्बुतान् मिहवुम्
कूर्न्ददु अत्तामरै त्ताळ्हळुक्कु, उन्तन् कुणंगळुक्के
तीर्न्द देन्शेय्हे मुन्शेय्विनै नीशेय् विनैयदनाल्
पेर्न्ददु, वण्मै यिरामानुज एम्पेरुन्तहैये ॥७१॥

औदार्यनिधे अस्मत्स्वामिन् महानुभव! भगवन् रामानुज! मम तु हृदयं भगवत्पादारविन्द युगलैकलग्नमभूत्; भक्तिश्च तदेकाग्रतां जगाहे। मदीया चर्चा च भवदीयगुणगणध्यानात्मिकैव समजनि। जन्मान्तरसञ्चितानि मदीयानि भूयांस्यघानि भवत्कृतदिव्यकटाक्षमात्रेण प्रणश्यन्तिस्म॥

हे औदार्य गुणवाले, हमारे स्वामिन्, महात्मन् श्री रामानुज स्वामीजी! मेरा मन आपके अभय पादारविंदों में लग्न हुआ; उन्हीं पादारविंदों के विषय में भक्ति भी बढ गयी; मेरा काम भी आपके कल्याणगुण समूह का ध्यान बन गया। और मेरे जन्मांतर कृत सभी पाप आपके कटाक्ष वीक्षण से नष्ट हो गये।

क्रमशः

तिरुमल, श्री बालाजी के मंदिर में दि. 08-08-2022 से दि. 10-08-2022 तक अत्यंत वैभव पूर्ण ढंग से पवित्रोत्सव मनाए गए हैं। इस कार्यक्रम में ति.ति.दे. के ई.ओ. श्री ए.वी.धर्मारेड्डी, आई.डी.ई.एस., के साथ-साथ मंदिर के सभी गणमान्य उच्च अधिकारीगण ने भाग लिया है।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

तिरुचानूर
श्री पद्मावती देवी का ब्रह्मोत्सव
2022 नवम्बर 20 से 28 तक

20-11-2022 रविवार
दिन - ध्वजारोहण
रात - लघुशेषवाहन

21-11-2022 सोमवार
दिन - महाशेषवाहन
रात - हंसवाहन

22-11-2022 मंगलवार
दिन - मोतीवितानवाहन
रात - सिंहवाहन

23-11-2022 बुधवार
दिन - कल्पवृक्षवाहन
रात - हनुमंतवाहन

24-11-2022 गुरुवार
दिन - पालकी उत्सव, सा - वसंतोत्सव
रात - गजवाहन

25-11-2022 शुक्रवार
दिन - सर्वभूपालवाहन
रात - गरुडवाहन

26-11-2022 शनिवार
दिन - सूर्यप्रभावाहन
रात - चंद्रप्रभावाहन

27-11-2022 रविवार
दिन - रथ-यात्रा
रात - अश्ववाहन

28-11-2022 सोमवार
दिन - पालकी तिरुच्चि उत्सव, तीर्थवारी, अवभृथोत्सव, चक्रस्नान, पंचमीतीर्थ
रात - तिरुच्चि उत्सव, ध्वजावरोहण

माँ कनकदुर्गा देवी जी के अलंकार

आश्वयुज शुद्ध पाड्यमी से दशमी तक अत्यंत वैभव से दसहरा के 'शरन्नवरात्री' महोत्सव दस दिन तक अपूर्व रूप से संपन्न करते हैं। अधिष्ठान देवता माँ दुर्गा देवी प्रत्येक दिन एक-एक अवतार में नौ दिन, नौ अलंकारों से, सुशोभित होकर, दसवें दिन 'विजयदशमी' त्योहार को श्रद्धा-भक्ति से और बड़े वैभव के साथ मनाते हैं। इस सु-अवसर पर आं.प्र. राज्य, विजयवाडा प्रांत में स्थित माताश्री कनकदुर्गा देवी के अलंकार सप्तगिरि पाठकों के लिए...

स्वर्णकवचालंकृत दुर्गा देवी

नवरात्री उत्सवों में प्रथम दिन दुर्गा देवी को स्वर्णकवच से अलंकृत करते हैं। अष्ट भुजाओं से, नक्षत्रों से भी अधिक प्रकाश देने वाली नथनी धारण कर, स्वर्णमयी छाया मुख से देवी माँ दर्शन देती है। सिंहवाहन का अधिरोहण कर, शंख, चक्र, गदा, शूल, पाश, महाखड्ग, परिघा नामक शस्त्र धारण करता है। मनुष्यों के समस्त शत्रुबाधाओं का निवारण करती है। इस माताश्री की आराधना करने से समस्त विजय प्राप्त होते हैं।

पूजा सामग्री : हल्दी अक्षत, पीले रंग के फूल। निवेदन : पुलिहोरा।

बालात्रिपुरसुंदरी देवी

त्रिपुरात्रयम् में बालात्रिपुरसुंदरी देवी पहला देवता है। मन, बुद्धी, घमंड इस माता के आधीन में रहते हैं। इस अवतार में देवी अभय हस्त, वरदमुद्रा का प्रदर्शन करती हुई, अक्षमाला का धारण करती है। इस माता की आराधना करने से हमेशा संतोष, आनन्द प्राप्त होता है। श्रीचक्र संप्रदाय में, षोडशी शिक्षा के लिए यह अधिदेवता है। इस देवता की अनुग्रह से सु-संतान प्राप्त होती है।

पूजा पद्धति : कुमारी/कन्या पूजा करना है। निवेदन : मीठी खीर।

गायत्रीदेवी

वेदमाता गायत्री, समस्त मन्त्रों केलिए प्रधान शक्ति है। पंच मुखों से शंख, चक्र, गदा, अंकुश नामक शस्त्र धारण करती है। गायत्री मन्त्र का उपासना के द्वारा बुद्धी का विकास होता है। इस माता की उपासना के द्वारा अनंत मंत्र शक्ति प्राप्त होती है। समस्त दुष्ट उपद्रव हट जाते हैं। ब्रह्मज्ञान प्राप्त होता है। गायत्री मन्त्र का पारायण करने से, वेदपारायण का फल प्राप्त होता है।

पूजा पद्धति : वेदपंडितों की अर्चना करना है। निवेदन : अदरक के गारेलु।

अन्नपूर्णा देवी

अन्नपूर्णा देवी एक हाथ में सु-मधुर रसों से भरा-रत्न-मानिक्यादी से बना पात्र, और एक हाथ में चावल/अन्न परोसने केलिए उपयोगित चम्मच को पकडनेवाली 'माता अन्नपूर्णा देवी' के अवतार में दर्शन देती है। इस अवतार में माता लाल/गोरे शरीर में, गले में रत्नजटित स्वर्ण मालाओं को धारण कर, चाँद के समान सुंदर मुख से, सुविशाल त्रिनेत्रों से सुशोभित अलंकार में दर्शन देती है।इस माता की उपासना करने से, पुत्र-पौत्रों की वृद्धि, ब्रह्मतेज प्राप्त करते हैं।

पूजा पद्धति : सुकोमल लाल या सफेद फूलों से अर्चना करना है। निवेदन : दही चावल, पोंगली।

ललितात्रिपुरसुंदरी देवी

त्रिपुरात्रयम् में ललितात्रिपुरसुंदरी देवी द्वितीय देवता है। मणिद्वीप निवासिनि। श्रीविद्या स्वरूपिणी। उपासकों को मुख्य आराध्य देवता है। इस देवता का आविर्भाव चैतन्य नामक अग्नि कुंड से हुआ माना जाता है। इस अलंकार में दुर्गम्मा, करोड़ों सूर्यों के प्रकाश के समान देदीप्यमान से प्रकाशित होती है। हाथ में पाश, अंकुश, गन्ना धनुष - फूल के बाण अस्त्र को धारणकर दर्शन देती है। इस माता के दोनों ओर लक्ष्मी, सरस्वती पंखें हिलाते हुए सेवाएँ करती है। इस माता का आराधना करने से समस्त दरिद्र दूर होकर समस्त ऐश्वर्य प्राप्त होते हैं। पूजा पद्धति : कुंकुंम से पूजा करना है। निवेदन : मीठी खीर।

माँ कनकदुर्गा देवी जी के अलंकार

दसहरा महोत्सव के तारीख

26-09-2022 से 05-10-2022 तक

महालक्ष्मी देवी

महालक्ष्मी देवी के दोनों ओर गजराज सेवा में तत्पर रहते हैं। देवी माँ दोनों हाथों में कमल पुष्प का धारण कर, अभय, वरद मुद्राओं में भक्तों को दर्शन देती है। त्रिपुरात्रयम् में महालक्ष्मी मद्यशक्ति है। इस माताजी की उपासना द्वारा लौकिक संपत्तियों के साथ अलौकिक मोक्षसंपत्ति प्राप्त होती है। यह देवता शीघ्र फलदयानी है। पूजा पद्धति - लाल रंग के फूलों से पूजा करना है। निवेदन : पूर्णालु।

महासरस्वती देवी

मूला नक्षत्र के दिन सरस्वती देवी अलंकार के लिए अनमोल विशिष्टता देती है। यह देवता वाक्, बुद्धी, विज्ञान, कलाएँ... इत्यादि की अधिष्ठान देवता है। कच्छपी नामक वीणा, पुस्तक, अक्षमाला, सफेद वस्त्रों का धारण कर, मोर पर अधिरोहण कर भक्तों को दर्शन देती है। इस देवी की उपासना से लौकिक शिक्षा के साथ-साथ अलौकिक मोक्षशिक्षा भी प्राप्त होती है।
पूजा पद्धति : सफेद रंग के फूलों से पूजा करना है। निवेदन : दही चावल, चीनी की मीठी पोंगली।

दुर्गा देवी

दुर्गा देवी समस्त दुखों को दूर करती हैं। उग्ररूप में दुष्टों का संहार कर, शिष्ट जनों पर शांति से भक्तों की रक्षा करती है। पंचप्रकृति स्वरुपों में प्रथम मूर्ति है। लाल रंग की शारी, रत्न जटित मुकुट को धारण कर, आठ हाथों में तलवार, शंख, चक्र, गदा, त्रीशूल, धनुष-बाण, कलश, त्रिशूल नामक शस्त्र धारण कर, देवी माँ सिंहवाहन पर दर्शन देती है। इस देवी की उपासना करने से, समस्त रोग दूर होते हैं। पूजा पद्धति : चामंतिफूल, चमेली-फूल, जास्मिन फूल, अनार फल, लाल रंग के अक्षत से पूजा करना है। निवेदन : पोंगली, पुलिहोरा, पुलकम्।

महिषासुरमर्दिनी देवी

माता महिषासुरमर्दिनी देवी दिव्य प्रकाश से, अनेक शस्त्रों से सिंहवाहन पर यह माता भक्तों को दर्शन देती है। देवी ने नवमी के दिन, महिषासुर नामक राक्षस का संहार कर, लोगों की रक्षा करने के कारण, लोग उसी दिन से हर वर्ष ठीक 'महर्नवमी' मनाना एक आचार हो गया है। इस दिन चंडीआराधना करने से शत्रुभय नहीं रहेगा। हर कार्य में विजय प्राप्त होता है। पूजा पद्धति : सुहासिनी स्त्री फूलों से, शुभ मंगल द्रव्य पदार्थों से, हल्दी, कुंकुम से अपनी यथाशक्ति के अनुसार नए वस्त्रों को दान करना चाहिए। निवेदन : पानकम्, वडपप्पु, गारेलु, पुलिहोरा, पायसान्नम्।

श्रीराजराजेश्वरी देवी

यह देवी अपराजिता देवी के नाम से भी भक्तों की प्रार्थनाएँ स्वीकार करती है। समस्त लोकों की आराध्य देवता है। स्वप्रकाश ज्योति स्वरूप से, परमेश्वर के जाँघ को आसन बनाकर बैठती है। निश्चल, निर्मल मनोचित्त से जो देवी की आराधना करते हैं उनकी कामनाओं को पूरी करती हैं। इस माता की उपासना से मनुष्य माया मोह से विमुक्त होकर सच्चे मार्ग में, सच्चा जीवन व्यतीत करते हैं। इच्छा, ज्ञान, क्रिया शक्तियों को वरदान के रूप में आशीष देती है। पूजा पद्धति : पीले रंग के फूलों से अर्चना करना चाहिए। निवेदन : पंच भक्ष्य आहार और लड्डू।

75वीं भारत-स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर 'आजादी का अमृत महोत्सव' के विशेष कार्यक्रम के अंतर्गत तिरुपति में स्थित ति.ति.दे. के प्रशासनिक भवन से लेकर महति ऑडिटोरियम तक एक पैदल यात्रा के रूप में राली निकाली गयी है। इस कार्यक्रम में ति.ति.दे. के ई.ओ. श्री ए.वी.धमरिड्डी, आई.डी.ई.एस., तिरुपति जे.ई.ओ. श्रीमती सदा भार्गवी, आई.ए.एस., तिरुपति जे.ई.ओ. श्री वी.वीरब्रह्मम्, आई.ए.एस., सी.वी. अण्ड एस.ओ. श्री नरसिंह किशोर, आई.पी.एस., आदि उच्च पदाधिकारीगण के साथ-साथ ति.ति.दे. से संबंधित विद्या संस्थाओं के अध्यापक तथा छात्र-छात्राओं ने बडी संख्या में भाग लिया है।

विना वेंकटेशं न नाथो न नाथः।
सदा वेंकटेशं स्मरामी स्मरामी।।
हरे वेंकटेशं प्रसीद प्रसीद।
प्रियं वेंकटेश प्रयच्छ प्रयच्छ।।

पवित्र स्थल अप्पलायगुंटा गाँव में बसनेवाले श्री प्रसन्न वेंकटेश्वर स्वामी का मंदिर बहु प्रसिद्ध और प्राचीन है। तिरुमल क्षेत्र में श्री वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर के चारों ओर और भी कई बहुत पुरातन मंदिर हैं। इन सारे मंदिरों में भगवान श्रीनिवास के दर्शन करने का भाग्य मिलता है। ऐसे मंदिरों में एक प्रसिद्ध मंदिर अप्पलायगुंटा में श्री प्रसन्न वेंकटेश्वर स्वामी का मंदिर है।

'नारायणवनम्' नामक एक प्रसिद्ध गाँव में श्री वेंकटेश्वर स्वामी ने आकाशराज की पुत्री श्री पद्मावती देवी से विवाह किया। विवाहानंतर श्री वेंकटेश्वर स्वामी और पद्मावती देवी दोनों मिलकर पैदल तिरुमल जाने के लिए तैयार हुए। तिरुमल क्षेत्र को जाते समय बीच में 'अप्पलायगुंटा' गाँव पहुँचे। उस गाँव में तपस्या करनेवाले श्री सिद्देश्वर स्वामी जी को श्री वेंकटेश्वर स्वामी ने अपने दिव्य आशीर्वाद दिए। श्री वेंकटेश्वर के आशीर्वाद से वहाँ का पूरा क्षेत्र ही दिव्य हो गया। उस गाँव से आगे बढकर नव दंपती तोंडवाडा नामक गाँव पहुँचे। वहाँ स्थित अगस्त्य मुनि के आश्रम पहुँचे। अगस्त्य की सलाह पर नव दंपति श्रीनिवासमंगापुरम् में छः महिने तक रहे। इसीलिए श्रीनिवासमगांपुरम् में बसे स्वामी को कल्याण वेंकटेश्वर स्वामी कहा जाता है। फिर यहाँ से 'श्रीवारि मेट्टू' (सीढ़ीयों) मार्ग से नव दंपति पवित्र पुण्यस्थल तिरुमल पहुँचे।। तिरुमल के स्थल पुराणों में इस का स्पष्ट उल्लेख पाया जाता है।

अप्पलायगुंटा में विराजित स्वामी को श्री प्रसन्न वेंकटेश्वर स्वामी के रूप में पूजा करते है। इस मंदिर के परिसर हरे भरे अत्यंत अह्लादमय होता है। यहाँ विचरण करने से मन प्रसन्न हो जाता है। इसलिए यहाँ के स्वामी

अप्पलायगुंटा श्री प्रसन्न वेंकटेश्वर स्वामी की वैशिष्ट्य

- डॉ.पी.बालाजी, मोबाइल - 8074598291

को प्रसन्न वेंकटेश्वर स्वामी नाम पडा है। श्री प्रसन्न वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर के दक्खिन की ओर ऊँचे-ऊँचे पहाड हैं। गाँव के चारों ओर खेतों से हरा-भरा सा वातावरण बना रहता है और अत्यंत प्रसन्न और प्रशांत की अनुभूति होती है। इस मंदिर के प्रधान द्वार के पास ध्वजस्तंभ होता है। ध्वजस्तंभ के पीछे अंतरालय है। अंतरालय के सामने श्री वेंकटेश्वर स्वामी के दिव्य मूर्ति भक्तगणों को अपने आशीर्वाद देती दिखाई देती है। मंदिर के पास एक छोटा सरोवर है। सरोवर के आगे श्री प्रसन्न वेंकटेश्वर स्वामी के समीप में एक छोटी सा सुंदर श्री आंजनेय स्वामी का मंदिर भी है।

प्रसन्न वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर में पहले पहल श्री आंजनेय स्वामी की पूजा होती है। अनंतर श्री प्रसन्न वेंकटेश्वर स्वामी की सकल समस्त पूजा-विधि, अभिषेक आदि का निर्वहण करके भक्तों को दर्शन भाग्य से लाभान्वित करते हैं। यह मंदिर अत्यंत महिमान्वित है और भगवान के दर्शन भी प्रशांत वातावरण में हो जाते हैं।

अस्ति कल्पद्रुमः कोपि जातरुपलतावृतः।
वेंकटाद्रि शिखा रूढः स्मर्यताम परमार्थदः।।

भगवान श्री वेंकटेश्वर स्वामी को विष्णु देव का अवतार माना जाता है। भगवन श्री वेंकटेश्वर स्वामी को सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के स्वामी माना जाता है। पौराणिक आख्यानों के अनुसार इस मंदिर में स्थापित भगवान श्री वेंकटेश्वर की मूर्ति में ही भगवान बसते है और वे यहाँ समूचे कलियुग में भक्तों को अभय प्रदान करते उन की रक्षा करते हैं।

तिरुपति से अप्पलायगुंटा करीब (३०) तीस किलोमीटर दूरी पर है। तिरुपति से अप्पलायगुंटा श्री प्रसन्न वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर पहुँचने के लिए बस की व्यवस्था और प्राइवेट परिवहन व्यवस्था भी है। तिरुमल की यात्रा करनेवाले प्रत्येक यात्री के लिए अप्पलायगुंटा के श्री प्रसन्न वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन से परिपूर्ण पुण्य प्राप्त होता है। उन की यात्रा सफल होती है।

ओम नमो वेंकटेशाय।

गतांक से

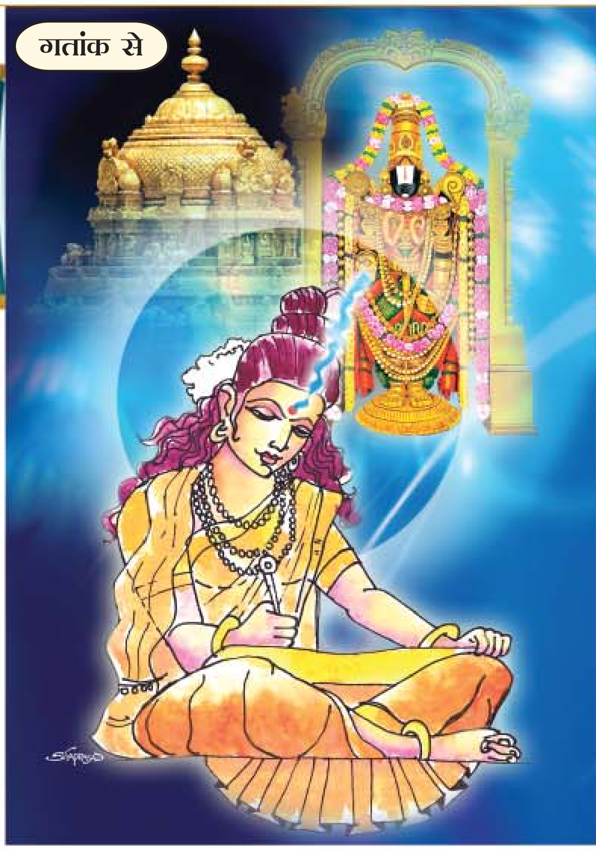

श्री वेंकटाचल की महिमा

(हिंदी गद्यानुवाद)

तेलुगु मूल
मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा

हिंदी अनुवाद
आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी
मोबाइल - 7842441868

कुमारधारा की महिमा :

वह विप्र अत्यंत बलहीन और शुष्क शरीरवाला था। वह अपने भटके हुए पुत्र कौंडिन्य की खोज कर रहा था। वह उसे न पाकर अत्यंत दुःखी था। वह रास्ता भी भटक गया था। वह वेंकटाद्री मार्ग पकड कर जा रहा था। घना जंगल था। निर्जन था। उसे भूख प्यास भी लग रही थी। वह अब नीचे गिरनेवाला ही था। उसने अपने पुत्र को याद किया "हे पुत्र कौंडिन्य! कहाँ चले गए हो?" बोलते बहुत दुःखी हो रहा था। तब दीनरक्षक भगवान ने उस के सामने खडे होकर बडी दया दिखाते इस रूप में कहा। "हे वृद्ध ब्राह्मण! इस महा जंगल में क्यों आये हो? अब धरती पर तुम कुछ दिन रह पाओगे या नहीं। शायद अभी देह छोड कर जा सकते हो। अपने बारे में बताओ?" यह सुनकर विप्र ने इस रूप में कहा। "हे महात्मा! अब मुझे शरीर पर आसक्ति नहीं है। मनुष्यों का ऋण चुकाये बिना मैं कैसे जा सकता हूँ।" इन बातों को सुनकर माधव ने उस विप्र के हाथ को पकड कर उसे पावन तीर्थ के पास ले गया। उस विप्र ने वहाँ स्नान किया। वहाँ स्नान करने के बाद वह सौ साल वृद्ध ब्राह्मण सोलह सालों का युवक बन गया। सोलह कलाओं के साथ परिपूर्ण होकर बाल-युवक बन कर खडा हो गया। हरि ने तब सहस्र शीर्ष, सहस्र बाहु, सहस्र पाद, सहस्र नेत्र वाले बन कर उस युवक को दर्शन दिए। यह देख कर गगन से इंद्र देवादि ने फूलों की वर्षा बरसायी। धुंधुभी बजायी। हरि के सिर पर फूलों की वर्षा बरसायी। विश्व रूपी भगवान को देखकर उन्होंने उनकी खूब स्तुति की। तब हरि विप्र की ओर देख कर "तुम को धन समृद्धि प्राप्त होगी। अब तुम देव ऋण चुकाने अपने आश्रम पर जाकर याग करो।" ऐसी आज्ञा दे कर हरि अदृश्य हो गये। विप्र भी अपना निजाश्रम लौट गया। इस प्रकार वृद्ध ब्राह्मण इस तीर्थ में स्नान करके बाल सुकुमार युवक बने हैं। इसलिए इस तीर्थ का नाम 'कुमारधारा' पड गया। "इस तीर्थ में तीन महीने कोई जितेंद्रीय बनकर त्रिकाल स्नान करेगा तो वह बज्र शरीरवाला बनेगा। वृद्धाप्य के बिना सुखी जीवन बितायेगा।" ऐसा निर्णय करके देवतागण अपने-अपने स्थानों पर लौट गए। जाबाली मुनि के द्वारा सुनी हुई कथा को सूत मुनि ने शौनकादि मुनियों को सुनायी है। और आगे सुनिए।

शंखणराजु का वृत्तांत :

सूत ने कहा "मुझसे पूर्व वाल्मीकी ने एक ऐसा ही इतिहास बताया। उस के बारे में बताऊंगा। सुनिए! चंद्र वंश में शंखण नामक एक राजा हुआ करते थे। कालदोष के कारण शत्रुओं से पराजित होकर वह अपने राज्य को

खोकर रामेश्वर पहुँच गया। वहाँ रामसेतु के पास स्नान करके सुवर्णमुखी नदी के पास पहुँचा। फिर सुवर्णमुखी में स्नान करके उस के उत्तर में रहनेवाले पद्म सरोवर के पास पहुँच गया। पद्म सरोवर में स्नान करके उस के तट पर खडे होकर इस रूप में सोचने लगा। 'मेरा अहो भाग्य है! शत्रुओं के साथ युद्ध करके हार गया। अपने राज्य को खो दिया। अब मेरा खान-पान कैसे चलेगा। इन कष्टों को मैं कैसे झेल पाऊंगा। भगवान ने मेरी ऐसी गति क्यों करवायी। आगे मेरा क्या होगा?' ऐसे सोचते वह बहुत चिंता कर रहा था। ऐसे अनेक प्रकार से दुःख का अनुभव करते हुए नेत्रों को बंद करके वह परवश हो गया था। तब अशरीर वाणी ने ऐसा कहा।''

''हे निर्मलात्मा! मन में तुम थोडा धैर्य बनाओ। चिंता को दूर करो। यहाँ से उत्तर में एक क्रोस की दूरी पर वेंकटगिरि नामक पर्वत है। वहाँ तुम शीघ्र ही जाओ। वह पर्वत आर्तजन और पीडितों को कामधेनु समान है। शोकार्थियों को कल्पवृक्ष समान है। वह चिंतामणी नाम से अति प्रसिद्ध पर्वत है। वहाँ अकारण ही पीडाओं एवं बाधाओं के शिकार हुए लोगों के कष्टों को दूर करनेवाले श्री वेंकटेश्वर बसे हुए हैं। उन के मंदिर के पास स्वामिपुष्करिणी है। वह अत्यंत महिमावान पुष्करिणी है। वह इष्ट काम्यार्थो को पूरा करनेवाली है। वह सदा जल से भरा रहती है। उस के पश्चिम तट पर वल्मीकों से भरा पहाड है। वहाँ पर खडे होकर त्रिसंध्या कालों में पुष्करिणी में स्नान करके जितेंद्र और निष्ठा के साथ शंख, चक्र, गदाधारी श्री वेंकटेश्वर के षोडशोपचार-पूजाएँ करते रहो। तब वे स्वामी तुम पर प्रसन्न होकर तुझे फिर राज्याभिषिक्त करेंगे।'' अशरीरी वाणी की इन बातों को सुनकर शंखण प्रसन्न होकर वेंकटगिरि पर्वत पर चढ गया। वहाँ पर स्थित चंदन, पुन्नाग और भी अनेक फल-फूल, वृक्षों से सुशोभित, चमरी, कस्तूरी, मृगादि से शोभित, शुक, कलकंठ, मयूर, राजहंस आदि पक्षियों की कलरव ध्वनियों भरे नयनानंदकारी दर्शन देनेवाले वेंकटाद्री पहाड के दर्शन किए। उस के बीच में अनेक दिव्य परिमल सुगंधों से भरे, शोणक, नीलोत्पलों से भरे, मत्स्य-कच्छप आदि जलचरों से भरी स्वामिपुष्करिणी के दर्शन किए। शंखण ने उस पुष्करिणी में तत्संकल्प के साथ त्रिकाल स्नान किया। साथ ही श्री वेंकटेश्वर स्वामी का ध्यान करते विशेष पूजाएँ की है।

श्रीहरि शंखण महाराज से प्रसन्न होना :

अनेक प्रकार की हारें, कुंडल, किरीट आदि भूषणों से सुशोभित कांतिमय प्रकाश से परिवेष्ठित, तुलसी मालाओं की सुगंध से तथा पुष्पमालिकाओं की सौरभ से सुशोभित, राजित सूक्ष्म उदरवाले, तिलकधारी, कमनीय कुटिल ललाटवाले, श्रीवत्स-कौस्तुभ चिह्नों को धारण करनेवाले, करुणा से भरे नेत्रोंवाले, शंख, चक्र, गदाधारी, हृदय पर लक्ष्मी को धारण करके प्रकाशवान, नीला और भूदेवी को अपने दोनों ओर धारण करनेवाले, दीन जनों का उद्धारक श्री वेंकटेश्वर स्वामी ने तब अनेक सहस्र-कोटि सूर्यप्रकाश सदृश दिव्य विमान मध्य में स्वामिपुष्करिणी के बीच में खडे होकर शंखण राजा को दर्शन दिए। तब ब्रह्म, रुद्र, देवताओं ने दुंदुभी बजायी। मृदंग और मंगलवाद्यों के साथ जय जयकार किया। साथ ही पुष्प वृष्टि करवायी। साथ ही नृत्य, गीतों के साथ निगमांत सूक्तों को भी सुनाया। तब शंखण महाराज ने स्वामी को साष्टांग दंड-प्रणाम करके इस रूप में विनति की है। ''हे देवाधिदेव! महात्मा! हे दीन रक्षक! हे जगन्नायक! मुझ पर दया करो! मेरी ओर करुणा से देखो! पूर्व आप के द्वारा

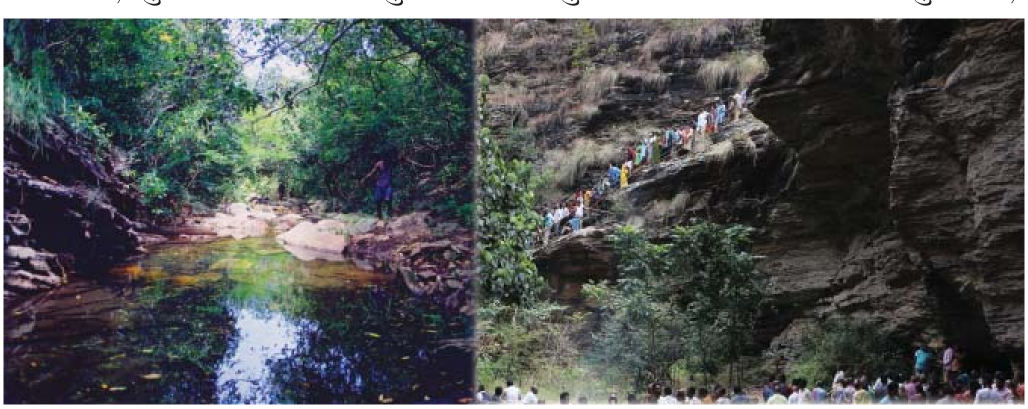

मेरे पूर्वजों को दी गयी पृथ्वी को मैंने शत्रुओं में खो दिया। अब मैं दीन हीन हूँ। ऐसे मुझे आप ने दर्शन दिए हे परम पुरुष! कृपया मेरे शत्रुओं का निर्जन करके फिर से मुझे अपने राज्य दिलाओ।'' ऐसी विनति करनेवाले शंखण से चक्री ने ऐसा कहा। ''हे राजा तुम अपनी चिंता छोडो! अपने देश लौट कर सपत्नी राज्याभिषिक्त होकर खुश रहो।'' कहते शंखण को आशीर्वाद समेत आज्ञा दी। तदूपरांत हरि अत्यद्भुत ढंग से अदृश्य हो गए।

तब ब्रह्मादि देवतागण हरि की प्रशंसा करके ''स्वामी की पुष्करिणी में स्नान करने कारण ही स्वामी प्रसन्न होकर शंखण को फिर से स्वामित्व प्रदान किया।'' कहते वे सब अपने-अपने स्थानों पर लौट गए।

तब शंखण महाराज ने स्वामिपुष्करिणी और पर्वत को प्रणाम करके, हरि को भी नमस्कार करके अपनी पत्नी के साथ अत्यंत आनंद से वेंकटाद्री पर्वत से उतर कर अपने राज्य लौटे। इधर शंखण के शत्रुओं की सोच में परिवर्तन आया। शंखण के साथ अपना विरोध को भी उन्होंने छोड देने का निर्णय किया। फिर से शंखण को राज्य लौटाने का निर्णय किया। यह सुन कर उस के देश के जन शंखण महाराज की खोज करते गोदावरी नदी के तट पर पहुँचे। तभी शंखण उस मार्ग में जाते अपने देश वासियों को पहचान लिया। अपने शत्रु के बारे में समाचार लेकर वह अपना देश कांभोज देश लौट गया। तदूपरांत श्री वेंकटेश्वर के प्रसाद के रूप में अपने राज्य को ग्रहण करके राज्य पालन करने लगा। ''यही नहीं बल्कि एक और इतिहास-वृत्तांत है, उसे भी सुन लीजिए।'' शौनकादि मुनियों से सूत ने कहा।

आत्माराम का इतिहास :

मध्य राष्ट्र में आत्माराम नामक एक ब्राह्मण रहा करता था। वह बहुत बडा पंडित था। धर्मनिष्ठ भी था। देव, भूसुर आदि की पूजा नियमित रूप से करता था। इस रूप में वह अपना धर्म भलि भांति निभा रहा था। पिता से प्राप्त संपदाओं को उसने कालांतर में खर्च कर डाला। फिर संपदाएँ नहीं कमायीं। तब गरीब बन गया। वह अंदर ही अंदर अपने बारे में सोच कर दुःखी हुआ करता था। ऐसा आत्माराम एक दिन अपना घर छोड कर श्री वेंकटेश्वर के बसे पर्वत के पास पवित्र कपिलतीर्थ पहुँच गया। वहाँ पर आत्माराम ने कपिलतीर्थ में स्नान किया। कपिलेश्वरस्वामी की निष्ठा के साथ पूजा की, फिर वहाँ से जंगल के रास्ते पर्वत पर चढने लगा।

सनत्कुमार के दर्शन करना :

कपिलतीर्थ के मार्ग में रहनेवाले सप्त तीर्थों में स्नान करके निर्मल चित्त के साथ आत्माराम पर्वत पर चढने लगा था। रास्ते में एक गुफा के मध्य में ध्यान निष्ठ सनत्कुमार की सन्निधि में वह पहुँच गया। सनत्कुमार का साष्टांग दंड प्रणाम करके उसने मुकलित हाथों से इस रूप में विनति की।

''हे तापसीवर्य! महात्मा! मुझे पापात्म को अपनाकर मुझे अपने साथ ले चलिए। आप के चरणों को छोडकर मेरी कोई और शरण नहीं है! हे निर्मल हृदय! मुझ पर दया कीजिए। दरिद्र से परिवार को छोड कर भागते आप की शरण में आया हूँ। मेरे कष्टों का निवारण करके सुख प्रदान कीजिए महात्मा!'' आत्माराम की बातें सुनकर उस महात्मा ने कहा। ''अब तुम को कष्ट क्यों? अपने पाप दूर हो जाने का समय आ गया है। तुम ने कौन सा पाप किया है? उस के बारे में सुनो। जन्मांतर में माधव की सेवा करने के विवेक से तुम दूर हो गए हो। साथ ही लोभ में पड कर दान कंटक बन कर गर्व करने लगा था। दान देनेवालों और दान लेनेवालों के बीच में तुम ने द्वेष पैदा किया था। ऐसी झूठी बातें उन्हें बताकर तुम ने दान-हानि का पाप किया है। आचार विहीन होकर कहीं भी खाते, पीते अपने को श्रेष्ठ समझ कर दूसरों को नीच के रूप में देख रहा था। दान दिए बिना धन को इकट्ठा किया था। वह पाप अब कपिलतीर्थ में स्नान करने से दूर हो गया। श्री पद्मालय की कृपा चाहिए तो तुम को ऐसा करना होगा। सुनो! व्यूहलक्ष्मी सदा श्रीहरि के वक्षःस्थल पर विराजमान होकर अपनी महिमा से स्वामी के भक्तों को संपदाएँ देती हैं।

क्रमशः

(मिथ की महिला चरित)

यशोदा

- डॉ.के.एम.भवानी,
मोबाइल - 9949380246.

भगवान श्री महाविष्णु ने विभिन्न अवतार लेते समय कभी अदिति, कभी कौसल्या, कभी देवकी तो कभी अनसूया के गर्भ से जन्म लिया। लेकिन पुनर्जन्म से माता को मिलनेवाला पूर्ण वात्सल्य सुख उनको नहीं मिला जो सौभाग्य पोषित माता याशोदा को प्राप्त हुआ। श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं को देखकर मुग्ध होने का परम सौभाग्य सिर्फ यशोदा को ही मिला। भगवान को साधारण बालक जैसा समझ कर दंड देना, उसे ओखली से बाँधना आदि काम माँ का सहज प्रेम, दंड प्रक्रिया यशोदा माता के पुत्र-प्रेम में देखने को मिलते हैं। भगवान को अपना स्तन्य देकर पालने वाली माता यशोदा अत्यंत भाग्यवान हैं।

संतान के लिए व्याकुल नंद-यशोदा दंपती पुत्र श्रीकृष्ण को पाकर असीम आनंद का अनुभव करते हैं। यशोदा के आनंद की तो सीमा ही नहीं रही। वह बहुत लाड़-प्यार से बच्चे का पालन-पोषण करती है। नवजात शिशु की दशा से ही श्रीकृष्ण बाल लीलाएँ दिखाते रहने पर भी हर बार वह माता यशोदा को माया में डुबोता रहता है। इसीलिए आँखों के सामने हर घटना होने पर भी यशोदा भगवान कृष्ण को अपना पुत्र ही समझती रहती है। उसके कुशल की चिंता करती रहती है। उसे नजर निकालती रहती है। भगवान कृष्ण ने भी यशोदा से माँ का परिपूर्ण प्यार का अनुभव करना चाहा। इसी कारण से अपने मुँह में सारी सृष्टि को दिखाने के बाद संभ्रम और आश्चर्य में पड़ी यशोदा तुरंत पुत्र प्रेम के मोह में फिर पड जाती है। गोकुल की सारी गोपियाँ श्रीकृष्ण की नटखट चेष्टाओं के बारे में यशोदा से शिकायत करती हैं। लेकिन पुत्र वात्सल्य में डूबी हुई यशोदा कभी भी उनकी बातों पर विश्वास नहीं करती है। ऊपर से छोटे बालक पर निंदारोपण करने के कारण गोपियों को ही भला-बुरा कहती है। कभी-कभी कृष्ण से इन बातों को कहकर समझाने की कोशिश करती है- ''कान्हा! हमारे घर में दूध या दही की क्या कमी है? क्यों सबके घरों में जाकर माखन चोर नाम पाते हो? क्या घर में मैं तुम्हें माखन या दूध नहीं दे रही हूँ। इस प्रकार बर्ताव करके पिता को बदनाम करना ठीक नहीं है।'' एक दिन यशोदा गोपियों से श्रीकृष्ण के बारे में शिकायतें सुन-सुन कर तंग और गुस्से में आकर कृष्ण को ओखली से बाँध देती है। इसे देखकर देव गण चकित हो जाते हैं। देवर्षि नारद तुरंत भगवान की इस लीला को अपनी आँखो से देखकर मुग्ध होने के लिए भूलोक में पहुँचते हैं और यशोदा के भाग्य पर खुश हो जाते हैं। इस तरह का यह भाग्य वेद वेद्यों को, ऋषि-मुनियों को भी दुर्लभ है, मगर भक्ति से बंधित परमात्मा ने माता यशोदा को यह सौभाग्य प्रदान किया। बंधित उदर वाले होकर दामोदर नाम से विख्यात हुए।

नंद-यशोदा के पूर्व जन्म वृत्तांत :

भगवान विष्णु रामावतार लेते समय सारे सुर, गंधर्व, यक्ष आदि देवगण विभिन्न रूपों में जैसे वानर, भल्लूक आदि योनियों में जन्म लेकर प्रभु की सेवा में तत्पर हुए। इसी प्रकार भगवान विष्णु श्रीकृष्णावतार लेने के पहले ब्रह्म देव ने सारे सुर गण को बुलाकर कृष्ण की सेवा के लिए भूलोक में जन्म लेने को कहा है। तब द्रोण नामक वसु और धरा नामक उसकी पत्नी उन्हें भूलोक में जन्म लेने पर भी उन्हें भगवान के प्रति निरतिशय प्रेम और वात्सल्य भक्ति प्राप्त होने का वर माँगते हैं। उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर ब्रह्म ने तथास्तु कहा है। वे ही दंपती नंद-यशोदा के रूप में जन्म लेकर साक्षात भगवान विष्णु को पुत्र के रूप में पालन-पोषण करके तर गए।

यशोदा - वकुला माता :

पुराणों के अनुसार माता यशोदा कलियुग में श्री वेंकटेश्वर की माता बनाकर आई है। द्वापरयुग में यशोदा श्रीकृष्ण की

माता के रूप में बाल लीलाओं के आनंदानुभव पाती है। लेकिन उसकी एक चाह रह जाती है। वह है- कृष्ण का विवाह अपनी आँखों से देखना। बृंदावन को छोडकर मथुरा जाने के बाद श्रीकृष्ण के आठ विवाह करने पर भी यशोदा एक भी देख नहीं पाती है। एक साधारण माता की तरह वह श्रीकृष्ण से यही कामना व्यक्त करती है कि वह अपनी आँखों से कृष्ण का विवाह देखना चाहती है। भक्त वत्सल भगवान यशोदा को यह वर देता है कि देखना ही नही, माता के हाथों से ही उसका विवाह होगा। अपने इस वचन को निभाने के लिए ही कलियुग में श्रीनिवास जब पद्मावती से विवाह करना चाहता है, तब वह विवाह कराने की जिम्मेदारी वकुला माता को ही सौंपता है। इस तरह भक्त वत्सल भगवान विष्णु यशोदा माता को दिये अपने वचन निभाकर उसे अत्यंत प्रसन्न करता है।

कृष्ण भक्ति साहित्य में यशोदा :

हिंदी साहित्य के सुप्रसिद्ध कवि सूरदास श्रीकृष्ण की बाल लीला वर्णन में अद्बितीय माने जाते हैं। किसी भी देश की भाषा में सूरदास के समान माता - पुत्र के बीच के वात्सल्य वर्णन करने वाला कवि दुर्लभ है।

सूरदास के द्वारा वर्णित श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं की कुछ झलकें :

कहन लागे मोहन मैया मैया।
नंद महर सों बाबा-बाबा अरु हलधर सों भैया।।

ऊंच चढि-चढि कहति जशोदा लै लै नाम कन्हैया।
दूरि खेलन जनि जाहु लाला रे! मारैगी काहू की गैया।।

गोपी ग्वाल करत कौतूहल घर-घर बजति बधैया।
सूरदास प्रभु तुम्हारे दरस कों चरननि की बलि जैया।

जसोदा हरि पालनैं झुलावै।
हलरावै दुलरावै मल्हावै जोइ-सोइ कछु गावै।।

मेरे लाल को आउ निंदरिया काहें न आनि सुवावै।
तू काहै नहिं बेगहिं आवै तोकौं कान्ह बुलावै।।

कबहुं पलक हरि मूंदि लेत हैं कबहुं अधर फरकावैं।
सोवत जानि मौन हवै कै रहि करि-करि सैन बतावै।।

इहि अंतर अकुलाइ उठे हरि जसुमति मधुरैं गावै।
जो सुख सूर अमर मुनि दुरलभ सो नंद भामिनि पावै।।

मैया मोहिं दाऊ बहुत खिझायो।
मो सों कहत मोल को लीन्हों तू जसुमति कब जायो।।

कहा करो इहि रिस के मारें खेलन हौं नहिं जात।
पुनि-पुनि कहत कौन है माता को है तेरो तात।।

गोरे नंद जसोदा गोरी तू कत स्यामल गात।
चुटकी दै-दै ग्वाल नचावत हंसत सबै मुसुकात।।

तू मोहीं को मारन सीखी दाउहिं कबहुं न खीझै।
मोहन मुख रिस की ये बातैं जसुमति सुनि-सुनि रीझै।।

सुनहु कान बलभद्र चबाई जनमत ही को धूत।
सूर स्याम मोहिं गोधन की सौं हौं माता तू पूत।।

जय यशोदा नंदन की।

गतांक से

ऋषि-मुनि

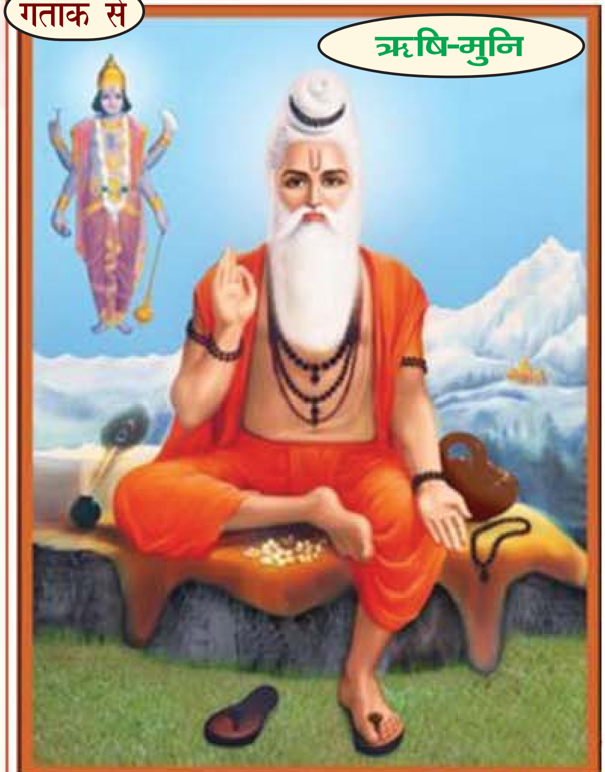

भृगु महर्षि

- डॉ.जी.सुजाता, मोबाइल - 9494064112.

महर्षि भृगु के इस क्षेत्र में आने का दूसरा आख्यान कुछ धार्मिक ग्रन्थों-पुराणों में मिलता है। देवी भागवत के चतुर्थ स्कंध विष्णु पुराण, अग्नि पुराण, श्रीमद्भागवत में खण्डों में बिखरे वर्णनों के अनुसार महर्षि भृगु प्रचेता ब्रह्म के पुत्र हैं, इनका विवाह दक्ष प्रजापति की पुत्री ख्याति से हुआ था। जिनसे इनके दो पुत्र काव्य शुक्र और त्वष्टा तथा एक पुत्री 'श्री' लक्ष्मी का जन्म हुआ। इनकी पुत्री 'श्री' का विवाह श्रीहरि विष्णु से हुआ।

दैत्यों के साथ हो रहे देवासुर संग्राम में महर्षि भृगु की पत्नी ख्याति जो योगशक्ति सम्पन्न तेजस्वी महिला थी, दैत्यों की सेना के मृतक सैनिकों को वह अपने योगबल से जीवित कर देती थी। जिससे नाराज होकर श्रीहरि विष्णु ने शुक्राचार्य की माता, भृगु जी की पत्नी ख्याति का सिर अपने सुदर्शन चक्र से काट दिया। अपनी पत्नी की हत्या होने की जानकारी होने पर महर्षि भृगु भगवान विष्णु को शाप देते हैं कि तुम्हें स्त्री के पेट से बार-बार जन्म लेना पड़ेगा। उसके बाद महर्षि अपनी पत्नी ख्याति को अपने योगबल से जीवित कर गंगा तट पर आ जाते हैं, तमसा नदी की सृष्टि करते हैं।

और एक कथा पद्मपुराण के उपसंहार खण्ड में मिलती है, जिसके अनुसार मन्दराचल पर्वत पर हो रही यज्ञ में महर्षि भृगु को त्रिदेवों की परीक्षा लेने के लिए निर्णायक चुना गया। भगवान शंकर की परीक्षा के लिए भृगु जी जब कैलाश पहुँचे, उस समय शंकरजी अपनी पत्नी पार्वती के साथ विहार कर रहे थे, शिवगणों ने महर्षि को उनसे मिलने नहीं दिया, उल्टे अपमानित करके कैलाश से भगा दिया। भृगु ने भगवान शिव को तमोगुणी मानते हुए, शाप दे दिया कि आज से लिंगाकार की ही पूजा होगी।

यहाँ से महर्षि भृगु अपने पिता ब्रह्माजी के ब्रह्मलोक पहुँचे। वहाँ इनके माता-पिता दोनों साथ बैठे थे, सोचा पुत्र ही तो है, मिलने के लिए आया होगा। महर्षि का सत्कार नहीं हुआ, तब नाराज होकर इन्होंने ब्रह्माजी को रजोगुणी घोषित करते हुए शाप दिया कि आप को कोई मंदिर होगा और आपकी कही पूजा भी नहीं होगी। फिर, इसके बाद भृगु मुनि विष्णु के लोक वैकुण्ठ गए।

विष्णु जी क्षीरसागर में विश्राम कर रहे थे, उनकी पत्नी उनके पैर दबा रही थी। वहाँ भी ऋषि का सत्कार नहीं हुआ। क्रोधित महर्षि ने विष्णु की छाती पर पैर से प्रहार किया। भगवान विष्णु ने महर्षि का पैर पकड़ लिया और कहा कि मेरे कठोर वक्ष से आपके पैर में चोट तो नहीं लगी। इस प्रक्रिया में, विष्णु ने भृगु की तीसरी आँख को नष्ट कर दिया जो उनके पैरों पर थी, जो उनकी अज्ञानता और अहंकार का प्रतीक था, और जैसे ही इसे नष्ट किया गया, उन्हें अत्यधिक दर्द के साथ अपने अहंकारी विस्फोटों के बारे में पता चला। उन्होंने विष्णु से क्षमा माँगी, जिन्होंने उन्हें तुरंत क्षमा कर दिया। महर्षि प्रसन्न हो गए और उनको देवताओं में सर्वश्रेष्ठ घोषित किया।

कथानक के अनुसार महर्षि की परीक्षा के इस ढंग से नाराज मरीचि ऋषि ने इनको प्रायश्चित करने के लिए धर्मारण्य में तपस्या करके दोषमुक्त होने के लिए बलिया के गंगातट पर जाने का आदेश दिया। इस प्रकार से भृगु मुनि अपनी दूसरी पत्नी पौलमी को लेकर सुषानगर से बलिया आ गए।

यहाँ पर उन्होंने गुरुकुल खोला, उस समय यहाँ के लोग खेती करना नहीं जानते थे, उनको खेती करने के लिए जंगल साफ कराकर खेती करना सिखाया। यहीं रहकर उन्होंने ज्योतिष के महान ग्रन्थ 'भृगु संहिता' की रचना किया। कालान्तर में अपनी ज्योतिष गणना से जब उन्हें यह ज्ञात हुआ कि इस समय यहाँ प्रवाहित हो रही गंगा नदी का पानी कुछ समय बाद सूख जाएगा तब उन्होंने अपने शिष्य दर्दर को भेज कर उस समय अयोध्या तक ही प्रवाहित हो रही सरयू नदी की धारा को यहाँ मंगाकर गंगा-सरयू का संगम कराया।

ज्योतिष शास्त्र और भृगु संहिता

सृष्टि में पैदा हुए और होने वाले सभी जीवों की महर्षि भृगु ने भगवान गणेश के सहयोग से कुण्डलियाँ पहले ही बनाकर रख दी थी। इन कुण्डलियों की संख्या तब करीब पचास लाख थी। समय के साथ अधिकांश कुण्डलियाँ नष्ट हो गई। कुछ हजार कुण्डलियाँ शेष रहीं।

महर्षि की इस संहिता की मदद से किसी भी जातक के तीन जन्मों का फल निकाला जा सकता है। इस ब्रह्माण्ड को नियंत्रित करने वाले सूर्य, चंद्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि आदि ग्रहों और नक्षत्रों पर आधारित वैदिक गणित के इस वैज्ञानिक ग्रंथ के माध्यम से जीवन और कृषि के लिए वर्षा आदि की भी भविष्यवाणियाँ की जाती थी। महर्षि भृगु की महानता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि उनके द्वारा रचित 'भृगु संहिता' आज भी हमारे लिए अनुकरणीय हैं। भृगु संहिता को ज्योतिष के क्षेत्र में अपनी तरह की पहली पुस्तक माना जाता है।

अग्नि के आविष्कारक

ऐसी मान्यता है कि धरती पर पहली बार महर्षि भृगु ने ही अग्नि का उत्पादन करना सिखाया था। उन्होंने ही बताया था कि किस तरह अग्नि प्रज्वलित किया जा सकता है और किस तरह हम अग्नि का

उपयोग कर सकते हैं। इसीलिए उन्हें अग्नि से उत्पन्न ऋषि मान लिया गया। जबकि वे प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने पृथ्वी पर अग्नि को प्रदीप्त किया था। ऋग्वेद में वर्णन है कि उन्होंने मातरिश्वन् से अग्नि ली और उसको पृथ्वी पर लाए। इसी कारण सर्वप्रथम भृगु कुल के लोगों ने ही अग्नि की आराधना करना शुरू किया था।

संजीवनी विद्या

कहते हैं कि भृगु ने संजीवनी विद्या की भी खोज की थी। उन्होंने संजीवनी-बूटी खोजी थी। अर्थात् मृत प्राणी को जिन्दा करने का उन्होंने ही उपाय खोजा था। परंपरागत रूप से यह विद्या उनके पुत्र शुक्राचार्य को प्राप्त हुई।

महर्षि भृगु का आयुर्वेद से भी घनिष्ठ संबंध था। अथर्वणवेद एवं आयुर्वेद संबंधी प्राचीन ग्रंथों में स्थल-स्थल पर इनको प्रामाणिक आचार्य की भाँति उल्लेखित किया गया है। आयुर्वेद में प्राकृतिक चिकित्सा का भी महत्व है। भृगु ऋषि ने सूर्य की किरणों के द्वारा रोगों के उपशमन की चर्चा की है। वर्षा रूपी जल सूर्य की किरणों से प्रेरित होकर आता है। वह शल्य के समान पीड़ा देने वाले रोगों को दूर करने में समर्थ है।

भृगु के आश्रम

भृगु का आश्रम 'दीपोत्सव' हरियाणा के नारनौल जिले और राजस्थान के झुंझुनू जिले की सीमा पर वर्तमान गाँव ढोसी में ढोसी हिल के आधार पर स्थित था। जहाँ से वह भरूच चले गए। उनके पुत्र च्यवन, जो च्यवनप्राश के लिए जाने जाते थे, उनका भी धोसी हिल में आश्रम था। तमिलनाडु के कांचीपुरम जिले के मरुदेरी में भृगु का एक आश्रम है। गुजरात में खेड़ब्रह्म ब्रह्म और भृगु की त्रिमूर्ति के परीक्षण की कथा से जुड़ा है।

अन्त में, भृगु भुइंज, सतारा, महाराष्ट्र के लिए चले, जहाँ उन्होंने समाधि ले ली। उनका आश्रम और उनकी पुत्री लक्ष्मी का मंदिर भी वहाँ स्थित है। उनके पुत्र च्यवन का आश्रम और समाधि भी भुइंज के पास च्यवनेश्वर पहाडी पर स्थित है।

महर्षि भृगु ने अपने समय में एक दिव्य स्तुति की रचना की थी, जिसके बारे में कहा जाता है कि पूर्णिमा तिथि को इसका केवल एक बार पाठ करने से व्यक्ति का समस्त मनोकामनाएँ पूरी हो जाती हैं।

समाप्त

गतांक से

श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108

- श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया
मोबाइल - 9482365339

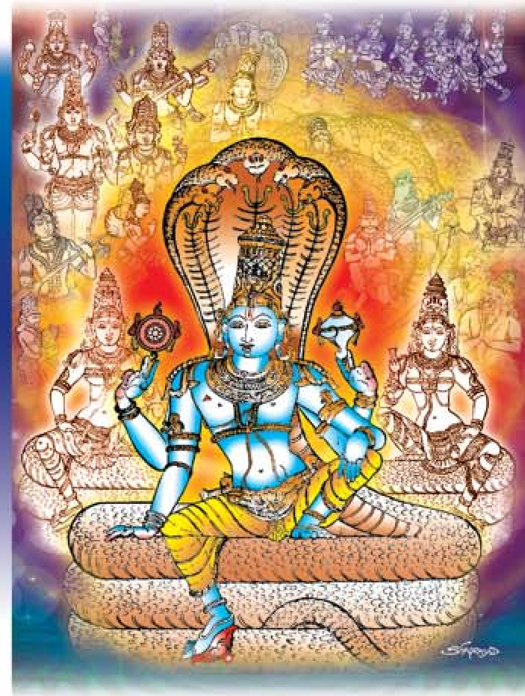

13) ''तिरुविण्णहर (ओप्पिलियप्पन कोइल) मार्कण्डेय क्षेत्र''

कुंभकोणम रेल्वे स्टेशन से 5 कि.मी. की दूरी पर है। (कुम्भकोणम चेन्नई-तिरुच्ची मैन लाइन में 88 कि.मी. की दूरी पर है।) कुम्भकोणम से बस की सुविधा है।

मूलमूर्ति - ओप्पिलियप्पन (जिनके सदृश कोई दूसरा नहीं) ''श्रीनिवास'' नाम भी प्रचलित है। तिरुमलै तिरुपति वेंकटाद्रिचलपति सदृश खड़े दर्शन देते हैं। (करतल) में 'मामेकं चरणं व्रज' इस श्लोक का एक अंश भगवान के दाएँ हाथ की हथेली में हीरों से अंकित है। पूर्वाभिमुखी दर्शन देते हैं। बडे वर प्रसादी हैं।

माताजी (तायार) - भूमि देवी - भूमि नाच्चियार के नाम से भगवान को नमस्कार करती हुई (विवाह) तिरुकल्याण स्थिति। तायार के लिए अलग सन्निधि नहीं है।

तीर्थ - अहोरात्र पुष्करिणी, आरती पुष्करिणी।

विमान - विष्णु विमान, शुद्धानन्द विमान।

प्रत्यक्ष - मार्कण्डेय, गरुड, कावेरी, धर्मदेवता।

विशेष - जो तिरुमलै तिरुपति की यात्रा नहीं कर पाते वे यहाँ आकर अपनी प्रार्थना समर्पित करते हैं। यहाँ वैखानस क्रम-पद्धति का अनुकरण किया जाता है।

वे यहाँ (वेंकटेश) भगवान को अपनी मनौती समर्पित करते हैं। यह ऐतीह है कि ये भगवान तिरुमलै/तिरुपति वेंकटेश भगवान के बडे भाई हैं। मृगण्डु महर्षि की प्रार्थना के अनुसार यहाँ बिना नमक के प्रसाद का निवेदन होता है। इसलिए भगवान को उप्पिलियप्पन (नमक को तेलुगु में 'उप्पु') भी कहते हैं। पुराणों में बताया जाता है कि

कोई नमक या नमक मिला खाद्य पदार्थ मंदिर के अन्दर ले जायें तो उनको नरक जाना पड़ेगा। हर महीने श्रवणा नक्षत्र के दिन श्रावण (अखंड) दीप जलाकर मंदिर की परिक्रमा में ले जाते हैं। यहाँ इसका बड़ा महत्व है।

मंगलाशासन - 4 आल्वार, 47 दिव्य पद। वैखानस आगम पद्धति के अनुसार आराधना की जाती है।

14) ''तिरुनरैयूर (नाच्चियार कोइल) मणिमाडक्कोयिल''

कुंभकोणम से लगभग 10 कि.मी. की दूरी पर है। कुंभकोणम चेन्नई-तिरुच्ची मेइन लाइन में तिरुच्ची से 18 कि.मी. की दूरी पर है। बस की सुविधा है। प्राचीन नाम सिद्धि क्षेत्र है।

मूलमूर्ति - श्रीनिवासन, तिरुनरैयूर नम्बि, वासुदेवन- दो हाथ पूर्वाभिमुखी। खडे दर्शन देते है। माताजी से विवाह की संस्थिति।

माताजी (तायार) - वञ्जुळवल्ली (नंबिक्कै) (विश्वास) नाच्चियार। भगवान के बाजू में विवाहोपरान्त खडे दर्शन देते हैं।

तीर्थ - मणि मुक्ता पुष्करिणी, संकर्षण तीर्थ, प्रद्युम्न तीर्थ, अनिरुद्ध तीर्थ, शाप तीर्थ।

विमान - श्रीनिवास विमानम, हेम विमानम।

प्रत्यक्ष - मेधावी मुनि, ब्रह्म।

विशेष - मेधावी ऋषि की पौष्य पुत्री वञ्जुलवल्ली को भगवान, अपनी स्थिति में (संकर्षण, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध शांभन नामक) पुरुषोत्तमन, वासुदेवन आदि पांच रूपों में विवाह करते हैं। मंदिर में छोटे बडे कुल 16 गोपुर हैं। यहाँ भगवान के कल (पत्थर) गरुड सेवा प्रख्यात है। भक्तों का यह विश्वास है- सात बार गुरुवार के दिन- लगाकर उक्त गरुड भगवान के दर्शन, अर्चना करने से प्रार्थनाएँ-कामनाएँ पूरी होती है। यह उल्लेखनीय है, कि पत्थर के बने इस गरुड वाहन की सन्निधि में पहले चार लोग, सन्निधि के बाहर आठ लोग, मंडप के बाहर 16 लोग और मंदिर के गोपुर द्वार में 64 लोग वहन करते इसके अनुसार धीरे-धीरे वजन बढ़ता है। गरुड वाहन में भगवान की शोभा-यात्रा निकलती है। कल गरुड भगवान के लिए अलग सन्निधि है।

इस मंदिर में माताजी तायार का ही प्रधान स्थान है। शोभा-यात्रा के वक्त वीथी में तायार (माताजी) ही पहले रहती है। इसलिए इस मंदिर का नाम नाच्चियार कोयिल है। गरुड सेवा के वक्त भगवान कल गरुड पर एवं तायार (माताजी) अन्न (हंस) वाहन पर शोभा-यात्रा में पधारते हैं।

तिरुमंगै आल्वार ने यहाँ के भगवान से समाश्रयण अंकित कर अष्टाक्षर मंत्रोपदेश लिया। यहाँ मार्गशीर्ष महीने में ब्रह्मोत्सव बडे वैभव के साथ सम्पन्न होता है।

क्रमशः

गतांक से

वकुला माता के जन्म रहस्य का आधार :

वकुला माता कलियुग देव श्री वेंकटेश्वर की माँ के रूप में लोक प्रचलित है। श्री वेंकटेश्वर साक्षात श्री महाविष्णु हैं। श्री महाविष्णु की माँ बनने यह अपूर्व गौरव और अवसर वकुला देवी को क्यों और कैसे मिला। यह बहुत कम प्रचलित है। साक्षात श्री महाविष्णु की माँ बनना साधारणसी बात नहीं है। अनेक जन्मों के पुण्य फल से ही यह संभव हो सकता है। इससे संबंधित एक कथा ब्रह्म वैवर्तन पुराण में प्राप्त होती है। एक बार सृष्टि कर्ता ब्रह्म ने अष्टवसुओं में एक द्रोण को बुलाकर लोक कल्याण करने का दायित्व सौंपा। यह द्रोण महाभारत कथा का द्रोणाचार्य नहीं है। तब द्रोण ने ब्रह्म के सामने एक प्रस्ताव रखा कि अगर उन्हें श्री महाविष्णु की सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त होगा तो वे लोक कल्याण करने के लिए तैयार है। तब ब्रह्म ने कहा कि श्री महाविष्णु की सेवा करने का सौभाग्य वैसे ही प्राप्त नहीं होगा। इस के लिए घोर तप करना होगा। फिर ब्रह्म से आज्ञा लेकर द्रोण वसुवु अपनी धर्मपत्नी धरादेवी को साथ लेकर धरती पर आये। उन्होंने सोचा कि श्री महाविष्णु को धरती पर ले आने से बडी सेवा और क्या हो सकती है। क्योंकि श्री महाविष्णु धरती पर पधारेंगे तो लोक कल्याण अपने आप आसानी से हो जाता है। इस के लिए उन्होंने आश्रम बनाकर घोर तपस्या करना शुरू किया। उन की पत्नी धरादेवी उन की सेवा करती रही।

एक दिन शिव-पार्वती और श्री महाविष्णु ने उन की परीक्षा लेना चाहा। शिव-पार्वती वेश बदल कर वृद्ध दंपति बने और श्री महाविष्णु एक युवक ब्रह्मचारी बन गए। एक दिन द्रोण आश्रम से बाहर गए हुए थे तब इन तीनों ने आश्रम में आकर धरादेवी से अपनी भूख-प्रयास के बारे में बताकर उन्हें भोजन खिलाने की प्रार्थना की। धरादेवी ने उन से बताया कि उन का पति बाहर गए हुए हैं और उन के आते ही भोजन तैयार करके उन्हें खिलायेगी। समय बीतता गया। द्रोण वापस नहीं आए। वृद्ध दंपति और ब्रह्मचारी ने धरादेवी से कहा कि उन्हें बहुत भूख लगी है। अब वे द्रोण की प्रतीक्षा नहीं कर सकते हैं। भोजन नहीं मिलेगा तो उनके देहावसान होने की संभावना है। धरादेवी थोडी देर और प्रतीक्षा करने की बात कहती रही और वे अपनी भूख को शीघ्र मिटाने की बात कहते रहे। द्रोण के वापस

वकुला माता

- आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी
मोबाइल - 7842441868

ने आने को देखकर धरादेवी ने बाहर जाकर भोजन के लिए आवश्यक सामान लाने की बात उन से कही। उन की आज्ञा लेकर गाँव में जाकर एक दूकान से भोजन का सामान खरीदा। दूकानदार ने सामान के लिए धन मांगा। किंतु धरादेवी के पास धन नहीं था। यही बात धरादेवी ने दूकानदार से कही और कहा कि द्रोण के लौटने के बाद उन का धन लौटा दिया जायेगा। किंतु नीच मन रखनेवाले उस दूकानदार ने धरादेवी से कहा कि तुम्हारे पास सौंदर्य रूपी जो धन है उसे मुझे स्पर्श करने के लिए अनुमति दे सकती है। धरादेवी दूकानदार की नीचता को समझ गयी। तुरंत उसने अपने दोनों थनों को काटकर धन के रूप में दूकानदार को दे दिया। थन के काटने से उस के शरीर से रक्त टपकने लगा। उसी अवस्था में किसी रूप में भोजन का सामान लेकर वह आश्रम पहुँच गयी।

वहाँ उन की प्रतीक्षा करनेवाले वृद्ध दंपति से कहा कि मैं इस अवस्था में आप को भोजन पका कर परोसने में असमर्थ हूँ। आप लोग इस सामान से भोजन पका कर अपनी भूख को मिटा लीजिए। कहकर वह धाराशाही हो गयी। धरादेवी के हृदय पिघलानेवाले इस दृश्य को और उन के बलिदान को देखकर शिव-पार्वती का हृदय हिल गया। वरदान के रूप में उन्होंने धरादेवी फिर जीवित किया। ब्रह्मचारी रूप धारी विष्णु भगवान ने धरादेवी से वरदान देते हुए कहा कि अगले जन्म में वे उनकी संतान के रूप में जन्म लेंगे और उन से अपनी भूख-प्यास को मिटा लेंगे।

धरादेवी को दिए वरदान के अनुसार श्री महाविष्णु ने त्रेतायुग में कौशल्या के गर्भ से श्रीराम के रूप में पैदा हुए। किंतु कौशल्या को अपनी संतान को पालन-पोषण का पूर्ण सुख प्राप्त नहीं हुआ। चौदह वर्ष श्रीराम वन वास पर गए। उस की छतिपूर्ति के लिए अगले जन्म में यानी द्वापर में कौशल्या फिर यशोदा के रूप में पैदा हुई। श्रीहरि ने श्रीकृष्ण के रूप में पैदा होकर उन्हें चौदह वर्ष पालन-पोषण करने का सुख दिया। फिर यशोदा की एक मनोकामना रह गयी। अपने पुत्र के विवाह देखने की। इस के लिए फिर यशोदा अगले जन्म में वकुला माता के रूप में पैदा हुई। इस जन्म में उन्होंने श्री वेंकटेश्वर और पद्मावती का विवाह कराकार अपने अनेक जन्मों की इच्छा की पूर्ति की। संतान को जन्म देना, उस का पालन-पोषण करना और विवाह करना ये तीनों काम प्रत्येक माँ के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य हैं।

धरादेवी को प्राप्त इस वरदान की पूर्ति के लिए उन्हें तीन जन्मों को लेना पडा। तभी उसकी अपने तप के पुण्य फल से श्री महाविष्णु को संतान के रूप में पाने का तथा लोक कल्याण करने की महदाकांक्षा की पूर्ति संभव हो सकी। मातृ-गरिमा की इन तीनों अवस्थाओं की पूर्ति तीन जन्मों में धरादेवी को संभव हो सकी। बल्कि मातृमूर्ति के पूर्णत्व को उन्होंने इन तीनों जन्मों के माध्यम से प्राप्त किया।

कलियुग में त्रेता की शबरी की प्रतीक्षा की तरह वकुला माता भी श्री वेंकटेश्वर की प्रतीक्षा करती रही। वेंकटाचल में अपना आश्रम बनाकर आश्रम जीवन जीते हुए श्री वेंकटेश्वर की प्रतीक्षा करती रही। श्री वेंकटेश्वर की परम भक्तिन मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा ने भी तिरुमल के पहाड वेंकटाचल को ही अपने तपोवन और आश्रम बना कर श्री वेंकटेश्वर की सेवा करती रही। वेंगमांबा ने अपने 'श्री वेंकटाचल माहात्म्यम' काव्य में श्री वेंकटेश्वर की जीवनी पर प्रकाश डालते हुए माता वकुला के चरित्र पर विस्तार से प्रकाश डाला है।

क्रमशः

आयुर्वेद

कडी पत्ता

- डॉ.सुमा जोषि, मोबाइल - 9449515046.

यह Rutaceae परिवार से है। इसका Latin Name Murraya Koenigii है। इसकी पत्तियों का उपयोग भारत, श्रीलंका और पडोसी देशों में कई व्यंजनों में किया जाता है। अक्सर कडी में उपयोग की जानेवाली पत्तियों को आम तौर पर 'करी पत्ते' के नाम से जाना जाता है। हालांकि वे ज्यादातर भारतीय भाषाओं में 'मीठे नीम के पत्ते' के नाम से भी जाने जाते हैं। यह न केवल एक विशेष स्वाद और सुगन्ध प्रदान करता है बल्कि प्रमुख स्वास्थ्य-ट्रिगर विटमिन और खनिजों के पावरहाउस के रूप में भी कार्य करता है। तमिल शब्द ''कारी'' से इसका व्युत्पन्न, जिसका अर्थ है मसालेदार। करी पत्ते का उल्लेख प्राचीन तमिल ग्रन्थों में मिलता है। वहाँ पर इसके अद्भुत लाभों और पाक महत्व के लिए चौथी शताब्दी ई. पूर्व के समय में किया गया है। यह पेड एक उपोष्णकरिबंधीय प्रदेशों में पाया जाता है। इसकी ऊंचाई ४-६ मीटर तक होती है।

करी पत्ते के फायदे

कार्बोहाइड्रेट, फाइबर, कैल्शियम, फॉस्फोरस, आयरन, मैग्नीशीयम, जिंक, मल्टीविटामिन और फ्लेवोनेइड जैसे पोषक तत्वों से भरपूर करी पत्ते स्वास्थ्य लाभ का एक आर्केड हैं।

इसमें एँटीऑक्सीडेंट गुण होते हैं। यह दस्त, अपच को रोकने में मदद कर सकता है।

यह अत्यधिक पाचक रसों के स्राव को नियंत्रित कर सकता है।

यह पोटिक अल्सर को शान्त कर सकता है। शुगर लेवल को कंट्रोल करने में मदद करता है। अस्वस्थ्य कर कोलेस्ट्रॉल के स्तर को ठीक कर सकता है। इसमें कैंसर रोधी गुण होते हैं। हृदय के लिए अच्छा है।

विटमिन-ए, फोलिक एसिड, कैल्शियम, फास्फोरस, लोहा, थायमिन, राइबोफ्लेविन, नियासिन, विटमिन-सी, कैरोटीन और ऑक्सालिक एसिड का समृद्ध स्रोत है। रोजाना इसका सेवन बालों को सफेद होने से रोकता है।

बालों का झडना रोकता है। रक्तचाप को नियंत्रित करता है। उल्टी कम करता है।

याददाश्त को बढ़ाता है। भूख को बढ़ाता है।

वजन घटाने में मदद करता है।त्वचा को बेहतरीन बनाकर मुहांसों को कम करता है।

करी पत्ते को साफ करके पानी का कम से कम प्रयोग में पीस लें। छूनकर जूस पिएँ।

यह उल्दी को रोकता है।

घी गरम करें और करी पत्ता और हल्दी पाउडर डालें। उबाल कर ठण्डा करें। घी को छान कर सेवन करें। यह आमतौर पर बच्चों को रोगप्रतिरोधक शक्ति बढ़ाने में मदद करता है।

करी पत्ते को धोकर धूप में सुखा लें। इसका पाउडर बनाकर एक एयर-टाइट कंटेनर में स्टोर करें। इस चूर्ण का ३-४ ग्राम रोजाना सुबह सेवन करें।

यह रक्त शर्करा के स्तर को कम करने के साथ-साथ अग्न्याशय द्वारा इंसुलिन के उत्पादन को बढ़ाने में मदद करता है।

करी पत्ते को धोकर पेस्ट बना लें। मुहांसों से प्रभावित चेहरे पर इससे मसाज करें। कुछ मिनट बाद धो लें। चमकती चहरे के लिए इसे फेस पैक की तरह उपयोग करें।

करी पत्ते के पेस्ट को गर्मी के कारण पैदा हुए फोडों पर भी लगाया जा सकता है।

कुछ करी पत्ते धो लें, उसमें दो गिलास पानी डालकर उबालें। जब एक चौथाई मात्रा बच जाये तो छान लें और पियें। यह पेटदर्द, गौस्ट्रिक परेशानी और अपच के लिय अच्छा है।

मुट्ठी भरकर करी पत्ते को पानी में उबाल लें। इस पानी से छाव को धो लें। यह उपचार प्रक्रिया को तेज करती है।

मुट्ठी भर करी पत्ते को धोकर, पेस्ट बना लें। एक कप नारियल का तेल गरम करें, पेस्ट डालें और आञ्च पर तब तक रखें जब तक कि पेस्ट काला न हो जाए। छानकर कांच की बोतल में भरकर रख लें। इसे रोजाना लगाएँ और स्कैला पर मसाज करें। एक घण्ठे के बाद माइल्ड शैम्पू से धो लें। यह समय से पहले बालों का सफेद होना कम करता है।

दांतों और मसूडों को मजबूत बनाने और हानिकारक बैक्टीरिया और वायुजनित रोगाणुओं से बचाने के लिए पतली दहनियों या शाखाओं का उपयोग दातुन के रूप में किया जा सकता है।

वजन घटाने के क्षेत्र में करी पत्ते एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पत्तियों को जब कच्चा खाया जाता है या रस के रूप में सेवन किया जाता है, तो यह शरीर को भीतर से शुद्ध करने, वसा जलाने, खराब कोलेस्ट्रॉल को कम करने और पाचन को बढ़ाने के लिय डिटॉक्स ड्रिंक के रूप में कार्य करता है।

एक कप गर्म पानी में दो बून्द करी पत्ते का तेल डालें और गरारे करें। इससे दान्त मजबूत होते है, दांतों और मसूडों के संक्रमण से बचाव होता है और ताजगी मिलती है।

शरीर के विभिन्न हिस्सों पर सूजन को कम करने और तुरन्त राहत पाने के लिए जैतून के तेल (Oilve Oil) की कुछ बूंदों के साथ शुद्ध करी पत्ते के तेल की २-३ बूंन्दों की मालिश करें।

एक चम्मच करी पत्ते के चूर्ण को छाछा में मिलाकर सेवन करने से गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल परेशानियों से राहत मिलती है।

एक चम्मच चूर्ण या सूखी छाल का काढ़ा नियमित रूप से पानी के साथ सेवन करने से जी मिचलाना और उल्टी कम हो जाती है।

यह गंभीर एलर्जी का कारण हो सकता है। इसलिए, अस्थमा की स्थितिवालें लोगों या पराग के प्रति एलर्जी वाले लोगों को इसका सेवन नहीं करना चाहिए।

करी पत्ते के पेड की छोटी फली का सेवन न करने की सलाह दी जाती है। क्योंकि यह प्रकृति में विषैला माना जाता है।

ब्लड प्रेशर की दवा लेनेवाले लोगों के लिए डॉक्टर की सलाह जरूरी है। विभिन्न अध्ययन रिपोर्टों से पता चलता है की जब रक्तचाप की दवा के साथ करी पत्ते का अर्क लिया जाता है, तो इसका नकारात्मक प्रभाव हो सकता है।

आयुर्वेद के डाक्टर की सलाह पर ही लें। यहाँ मात्र जानकारी दी है।

अक्तूबर महीने का राशिफल

- डॉ.केशव मिश्र
मोबाइल - 9989376625

मेष राशि - यह माह आपके लिए कष्टदायक रहेगा। दुर्जनों का सत्संग होने से अपमान, अपव्यय होगा। रोजी-रोजगार में असन्तोष, पित्त प्रकोप के कारण स्वास्थ्य खराब रहेगा, रोग बढेगा। मानसिक तनाव। नये कार्यों में विघ्न-बाधाएँ।

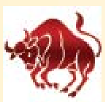

वृषभ राशि - आलस त्याग कर अपने कार्यों के ऊपर ध्यान दे। वरना कार्य की हानि और अपमान हो सकती है। पारिवारिक सदस्य एवं कुटुम्बीयजनों से असहयोग प्राप्त होगा। छात्रों के लिए शिक्षा क्षेत्रों में प्रगति, मित्रों का सहयोग प्राप्त। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा।

मिथुन राशि - यह माह आपके लिए उत्तम रहेगा, अपनों का सहयोग, इष्टमित्रों का साथ, पत्नी पुत्रों की सहायता मिलेगी। आत्मबल में वृद्धि, आर्थिक स्थिति बढ़ेगी, भाग्योन्नति। दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा। कार्यों में प्रगति। नए कामों के लिए अवसर प्राप्त होंगे।

कर्कट राशि - नये कार्य प्रारम्भ करने का सुयोग अवसर। ईमानदारी के साथ अपना कार्य करें लाभ प्राप्त होंगे। सुख-सन्तोष की वृद्धि होगी। विपत्तियों का निवारण, गुप्तधन लाभ। धर्मकार्यों में रुचि बढ़ेगा, तीर्थयात्रा का योग बन रहा है।

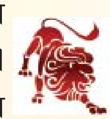

सिंह राशि - राजनैतिक क्षेत्रों से लाभ मिलेगा जिससे मान-सम्मान, पदोन्नति, आर्थिक लाभ प्राप्त होंगे। कार्य क्षेत्रों में लाभ का अवसर। दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा। अपनों का सहयोग प्राप्त होता रहेगा। देवी आराधना करे। मनोकामना अवश्य पूरी होगी।

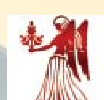

कन्या राशि - स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, कार्यों में रूचि, व्यक्तित्व का विकास। मानसिक शान्ति, उत्साह से भरपूर, कार्य क्षेत्र में लाभ। धन लाभ, विवादों से लाभ, शत्रु पक्ष पराजित होंगे। मित्रों का सहयोग, पुत्र के कार्य से मन प्रसन्न होगा।

तुला राशि - यह माह आपके लिए मध्यम रहेगा, यात्रा योग बन रहा है। मित्रों का भरपूर सहयोग, राजनैतिक क्षेत्रों से अनेकानेक लाभ। व्यापार-व्यवसाय से लाभ। धन की लेन-देन न करे। धन वापस नहीं आएगा।

वृश्चिक - अपने कार्यों को ध्यान पूर्वक करें कार्य में व्यावधान उत्पन्न हो सकता है। पारिवारिक सहयोग, धन लाभ। कुटुम्बियों, मित्रों का सहयोग पूर्ण रहेगा। तीर्थयात्रा का योग है। धार्मिक कार्य संपन्न होंगे।

धनु राशि - इस माह में दूसरों के द्वारा काम बनेगा, इसलिए लोगों से सम्पर्क करे और अपना कार्य सम्पादन करे। दम्पत्य जीवन मध्यम बना रहेगा। शारीरिक कष्ट, मानसिक तनाव, बाल-बच्चों की चिन्ता रहेगी। धन व्यय योग प्राप्त है।

मकर राशि - यह माह आपके लिए उत्तम रहेगा, अन्न-धन-वस्त्राभूषणों का लाभ होगा। शरीर उत्तम रहेगा। अपनी दिनचर्या को संतुलन बनाकर रखे। छात्रों के लिए सुअवसर, शैक्षणिक विकास, नौकरी प्राप्ति का योग है।

कुम्भ राशि - यह माह आपके लिए अच्छा रहेगा। पुत्र-धन-स्त्री-सुख प्राप्त। मान-प्रतिष्ठा-पदोन्नति में वृद्धि। खर्च के कारण धन व्यय होगा जिससे मन खिन्न रहेगा। रुके कार्य में सुधार। नए कार्य प्राप्त होंगे। अपने क्रोध के ऊपर नियंत्रण रखे।

मीन राशि - यह माह आपके लिए असन्तोष जनक है, ठीक से धैर्य पूर्वक अपने कार्यों का सम्पादन करें। बनते-बनते कार्य बिगड़ सकता है। मानसिक शांति के लिए धार्मिक कार्य करे, देवी आराधना श्रेयस्कर होगा, दुर्गा-सप्तशती का पाठ नियम पूर्वक करें।

नीतिकथा

आत्म संयम

- श्री के.रामनाथन ,
मोबाइल - 9443322202

शरीरं चैव वाचं बुद्धिन्द्रिय मनांसि।
नियम्य प्राञ्जलिः तिष्ठेत् वीक्षमाणों रुरोर्मुखम्।।

इसका मतलब यह है कि शरीर, बुद्धि, इन्द्रिय और मन को संयम में रखकर हाथ जोड़कर गुरु को आदर देना चाहिए। यह तो सत्य है कि मानव को महान बनाने में आत्म संयम का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। इसलिए आत्म संयम देवगुण माना जाता है। इस पर एक रोचक कहानी भी है।

एक बार देवगण और असुरों के बीच में कठोर युद्ध हुआ था। दोनों ने अत्यधिक बल का प्रयोग किया था। लंबे समय तक यह युद्ध चला था। इसलिए जीत किसको मिलेगी यह बताना मुश्किल हो गया था।

यह देखकर भगवान ब्रह्म ने सोचा कि यदि देवगण हार जाये तो सातों लोकों में असुरों का अत्याचार बढ जायेगा। इसलिए इस स्थिति को किसी न किसी तरह रोककर सातों लोकों को बचाना चाहिए।

यह सोचकर उन्होंने देवगणों को बुलाकर युद्ध में जीतने का उपाय बताया। इसलिए देवगणों को आखिर जीत मिल गयी। कठोर युद्ध के बाद प्राप्त इस जीत से देवगण अत्यंत खुश हुए। देवगणों के मन में अपनी जीत के बारे में घमंड की भावना पैदा हो गयी। उन्होंने इस बात को भूल गये कि उनकी जीत का मूल कारण भगवान ब्रह्म है और उनमें निहित देवी की अपार शक्ति है। इसलिए वे अंधाधुंध व्यवहार करने लगे।

देवगणों के ऐसे व्यवहार से भगवान ब्रह्म को बड़ा दुःख हुआ। उन्होंने देवगणों को एक सबक सिखाना चाहा। वे एक साधु के वेश में देवलोक आ पहुँचे। देवलोक में आये अतिथि से देवगणों के राजा इंद्र ने उनका परिचय जानकर आने के लिए अग्निदेव को भेजा।

अपने सामने अग्निदेव को आते देखकर उसके सवाल करने के पहले उन्होंने उसे देखकर पूछा, ''तुम कौन हो?'' यह सुनकर उसने बडे घमंड से जवाब दिया, ''मैं अग्निदेव हूँ। सभी देवों मेरे द्वारा ही यज्ञ कुंड में आहुति अर्पण करते हैं। मेरे द्वारा ही उनको आहुति पहुँचती है। मैं सभी चीजों को जला सकता हूँ।''

उसका परिचय पाकर साधु के वेश में आये भगवान ब्रह्म ने उसे देखकर कहा, ''अच्छा! यदि तुम में इतना बल है तो क्या एक छोटा कार्य कर सकते हो?''

अग्निदेव ने कहाँ, ''बताइये, मुझे क्या जलाना है?''

तब भगवान ब्रह्म ने उसे देखकर कहा, ''देखो तुम्हारे सामने जमीन पर पडे इस छोटे तृण को तुम जला सकते हो?''

यह सुनकर अग्निदेव ने बडे घृणित भाव से उस तृण को जलाने का बडा प्रयास किया और आखिर वह उस तृण को जलाने में असफल निकला। उसके बाद वह देवराज इंद्र के पास लौटकर सारी बातें सुनायी।

देवराज इंद्र ने तुरंत वायुदेव को साधु का परिचय जानकर आने के लिए भेजा। वायुदेव ने साधु को देखकर अविनयी भाव से कहा, ''मैं वायुदेव हूँ। मेरे बिना संसार में कोई जीव जी नहीं सकता है। किसी भी चीज को भी हिलाने की शक्ति मुझ में है।''

यह सुनकर साधु ने उसे देखकर कहा, ''यदि तुम में इतना बल है तो तुम जरा इस तृण को हिलाकर अपना सामर्थ्य दिखाओ।''

तुरंत वायुदेव ने बडी तेजी से फूँका, पर वह तृण तो अपने स्थान से रद्दी भर भी हिला नहीं। उसके बाद उसने तूफान के बराबर जोर से हवा को बहाने लगा, फिर भी वह तृण वैसे ही पडा था। इसलिए वह अपनी हार स्वीकार करके देवराज इंद्र के पास लौटकर सारी बातें सुना दी।

इन सब को सुनकर देवराज इंद्र को बडा आश्चर्य हुआ। वह खुद उस साधु से मिलने के लिए वहाँ आ पहुँचा। तब तक भगवान ब्रह्म वहाँ से निकल गये थे। अब उनके स्थान पर देवी पराशक्ति एक स्त्री के रूप में उपस्थित थी। वहाँ आया देवराज इंद्र ने उस स्त्री को देखकर पूछा,''हे भद्रे! तुम कौन हो? अब तक एक साधु यहाँ उपस्थित थे, वे कहाँ चले गये?''

तब देवी ने उसे देखकर कहा, ''हे मूर्ख! अब तुम जीत के नशे में हो। इसलिए तुम्हारी आँखें बंद हो गयी हैं। मैं तो हर एक देव में होने वाली शक्ति का मूलाधार पराशक्ति हूँ। तुम और तुम्हारे देवगण इस सत्य को भूल गये हैं कि जीत हो या हार समभाव से रहना ही देवगुण है। तुम सब अपना आत्म संयम खोकर अंधाधुंधा व्यवहार कर रहे हो। इसलिए सदा रहने वाले सत्य को समझो और सदा आत्म संयम से रहना सीखो।''

देवी के ऐसे उपदेश से देवराज इंद्र और अन्य देवगणों को अपनी गलती मालूम हुई और उनकी आँखें खुल गयीं। उन्होंने देवी के चरणों में पडकर नमस्कार किया और अपनी भूल केलिए क्षमा याचना की। देवी उनके मन परिवर्तन से खुश हुई और उनको माफ करके अदृश्य हो गयी।

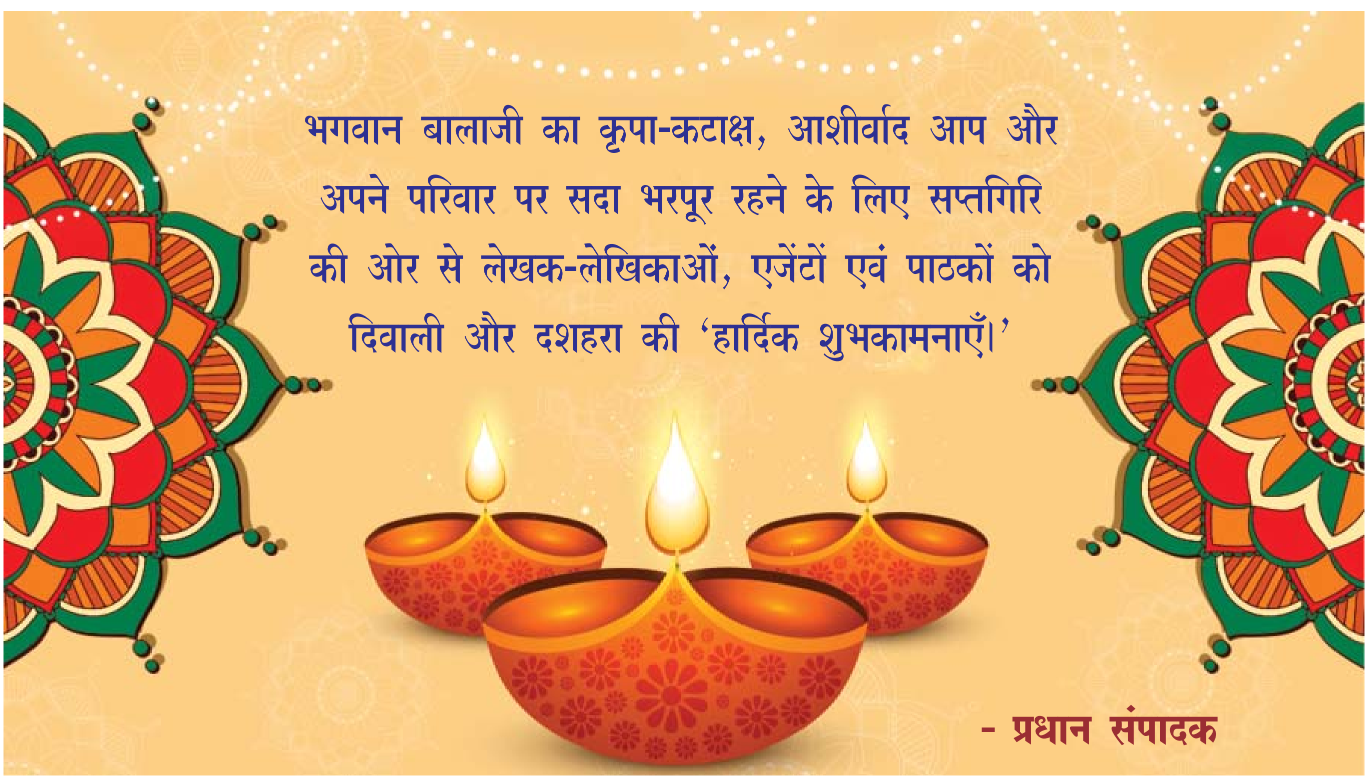

चित्रकथा

जो आया है वही फल्गुण

तेलुगु में - डॉ.के.रविचंद्रन्
हिन्दी में - डॉ.एम.रजनी
चित्र - श्री टी.शिवाजी

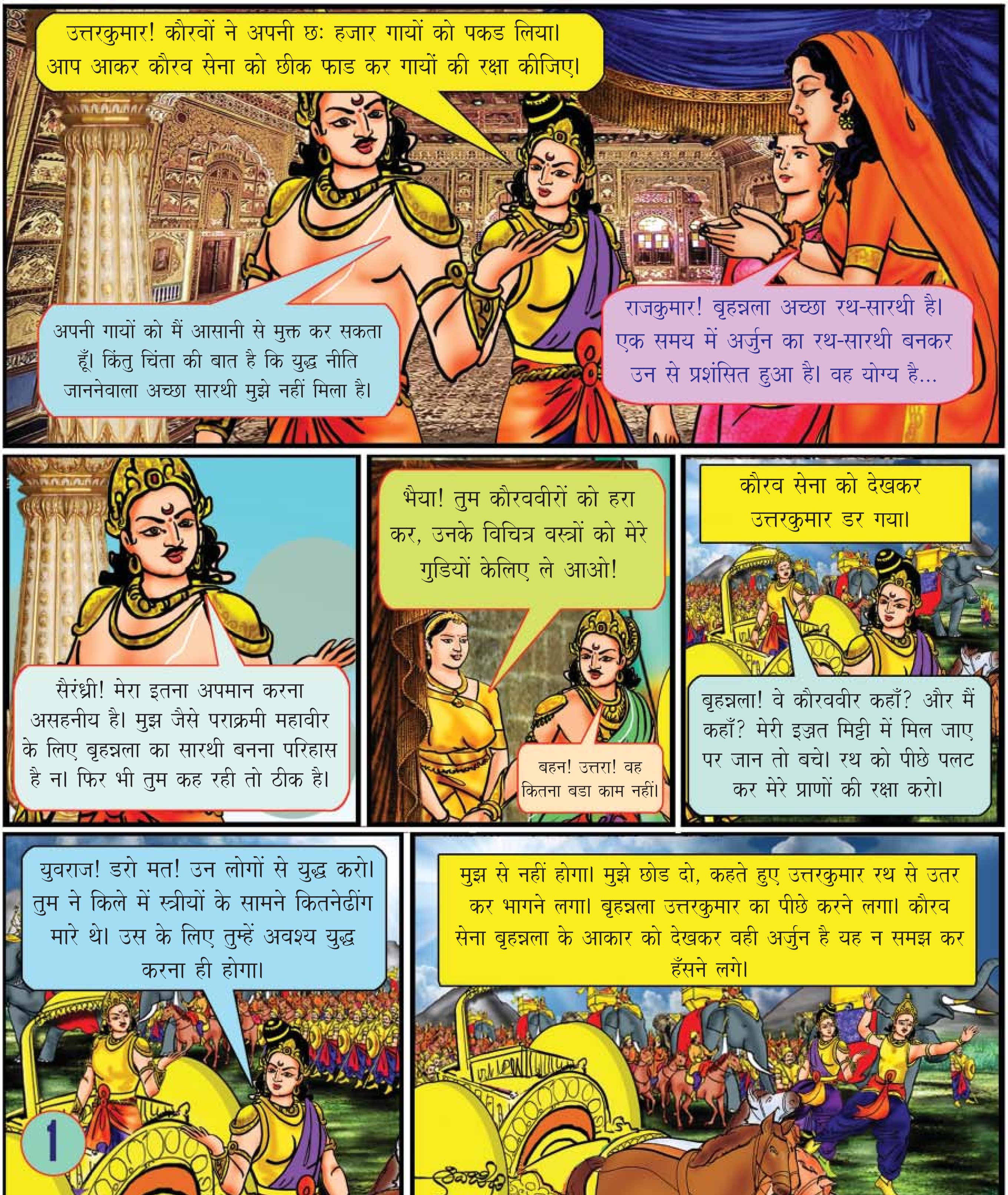

राजकुमार! जाने दो मैं युद्ध करके गायों को छुडाऊँगा तुम रथ को चलाओ।
उत्तरकुमार! इस शमी वृक्ष पर दिखाई देनेवाला उस गठरी को नीचे उतारो? उस में अर्जुन का गांडीव है। उस गांडीव के बिना हम शत्रुओं का सामना नहीं कर सकते।
आचार्य यह तो मृत कलेवर है..
राजकुमार! ये पांडवों के शस्त्र हैं। दूसरों की नजर से बचाने इन्हें शवाकृति में छिपा दिए। उस गठरी में से गांडीव निकालकर मुझे दो।
उत्तरकुमार ने उस गठरी को खोला। उस गठरी में रहनेवाले सारे शस्त्र अजीब ढंग से चमक रहे थे। सुनहले अजगर जैसे चमकने वाले गांडीव को देखकर उत्तरकुमार एकदम चौंक पडा। अर्जुन अपने नामों के पीछे छुपी हुई सारी कहानियों को बताने पर उत्तरकुमार समझ गया कि बृहन्नला ही अर्जुन है।
अर्जुन ने देवदत्त तथा गांडीव को धारण किया। दोनों युद्ध भूमि की ओर आगे बढे...
सुयोधन! निश्चय ही जो आया है वही फल्गुण है।
पितामह!... वह अर्जुन ही हो तो पाँडवों का खेल खत्म हो जायेगा। फिर से उन्हें बारह साल वनवास अवश्य करना पडेगा।
अर्जुन गांडीव धारण करके अपने निज रूप में हमारे सामने आयेगा तो थोडा दिमाग लगाकर सोचना चाहिए। मेरे हिसाब से इस विजयदशमी तक पांडवों के अरण्य और अज्ञातवास दोनों भी निर्विघ्न रूप से समाप्त हो गए। इसलिए जो आया वही फल्गुण है। उसे हराना आसान नहीं है।
2
अर्जुन ने अपनी युद्ध कुशलता से कौरव वीरों को भगा कर, गोगणों की रक्षा की। विजयदशमी के दिन इस कहानी सुननेवाले सभी को शुभ प्राप्त होंगे।
स्वस्ति।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान,
तिरुपति।

प्रश्नोत्तरी (क्विज) की नियमावली

1) प्रश्नोत्तरी की प्रतियोगिता केवल 15 वर्षों के अंदर बच्चों के लिए है।
2) भाग लेने वाले बच्चे हिंदु धर्म के होना अनिवार्य है।
3) इस प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले बच्चों के अभिभावक अनिवार्य रूप से ति.ति.दे. के द्वारा प्रकाशित होने वाली 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक मासिक पत्रिका का चंदादार होना आवश्यक है। प्रश्नोत्तरी के जवाबों के साथ अनिवार्य रूप से चंदादार की अपनी चंदा संख्या, नाम, पता, पिन-कोड के साथ फोन नंबर भी स्पष्ट रूप से लिख कर हमारे कार्यालय को भेजना चाहिए।
4) प्रश्नोत्तरी के जवाब, प्रश्नों के नीचे सूचित खाली जगहों पर लिख कर भेजना चाहिए।
5) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र ओरिजनल या जिराक्स प्रति मान्य है।
6) जवाबों में कोई काट-छांट या सुधार नहीं होना चाहिए।
7) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र पहुँचाने की अंतिम तिथि 25-10-2022 है।
8) इस प्रश्नोत्तरी या क्विज में सही जवाब लिखने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को मात्र ही 'लक्कीडिप पद्धति' में चुन कर विजेताओं की घोषणा की जाती है।
9) घोषित विजेताओं के नाम आगामी मास की 'सप्तगिरि' पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं।
10) ति.ति.दे. के प्रधान संपादक कार्यालय में कार्यरत कर्मचारियों के बच्चे इस प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के लिए अयोग्य हैं।
11) प्रश्नोत्तरी से संबंधित कोई भी समाचार फोन से नहीं दिया जाएगा। कृपया फोन से संपर्क न करें। ति.ति.दे. का निर्णय ही अंतिम है।
12) क्विज का समाधान भी इसी पुस्तक में है।

प्रश्नोत्तरी-जवाब कृपया इस पते पर भेजे :-
प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे. प्रेस परिसर, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507, तिरुपति जिला, आंध्र प्रदेश।

बच्चे का नाम...
आयु..........., चंदा नंबर.........................
पता..
....
मोबाइल नं...

क्विज-3

1) श्री महाविष्णु का प्रिय वाहन कौन है?
ज)..
2) विष्णु भगवान के दक्षिण पार्श्व में कौन-सी देवी और वाम पार्श्व में कौन-सी देवी विराजमान होती है?
ज)..
3) वृद्ध ब्राह्मण कौन-से तीर्थ में स्नान करके युवक बना हैं?
ज)..
4) देवी नवरात्रियाँ कौन-से मास में संपन्न होती हैं?
ज)..
5) पर्वतराज हिमालय की पुत्री का नाम क्या है?
ज)..
6) केदारगौरी व्रत को कौन-से दिन संपन्न करते हैं?
ज)..
7) श्री रामानुजाचार्य जी अपनी योगमाया के द्वारा जगन्नाथपुरी से कौन-से क्षेत्र को पहुँच गए?
ज) ....
8) श्री प्रसन्न वेंकटेश्वर स्वामी विराजित जगह का नाम क्या है?
ज) ....
9) नंद-यशोदा के पुत्र का नाम क्या है?
ज)..
10) ओप्पिलियप्पन कोइल की माता जी का नाम क्या है?
ज)..
11) भृगु ने कौन से देवताओं की परीक्षा करने का निर्णय लिया है?
ज)..
12) शिव-पार्वती और श्री महाविष्णु तीनों मिलकर किस व्यक्ति की परीक्षा ली है?
ज)..
13) श्री महाविष्णु के शंख-चक्र का नाम क्या है?
ज)..
14) कपिलेश्वर स्वामी के निकट ही स्थित जलपात का नाम क्या है?
ज)..
15) विष्णु भगवान कौन से सागर में विराजित रहते है?
ज)..

इस चित्र को रंगों से अब भरें क्या?

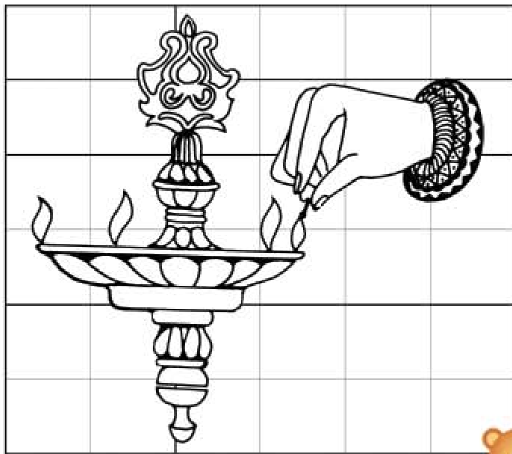

बगल में सूचित चित्र को नीचे के डिब्बों में खींचिये-

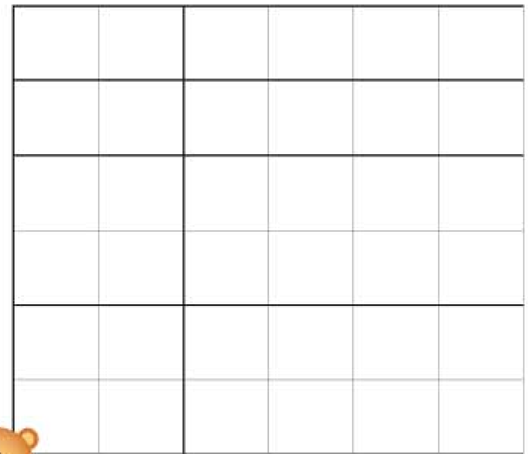

निम्न लिखित को मिलाएँ!

1) श्रीराम	अ) बलराम
2) गणेश	आ) तोंडमान
3) श्रीकृष्ण	इ) अर्जुन
4) आकाश राज	ई) कुमारस्वामी
5) धर्मराज	उ) लक्ष्मण

1) उ 2) ई 3) अ 4) आ 5) इ

देवी माँ का मंत्र

सर्वमंगल मांगल्ये शिवे
सर्वार्थ साधिके
शरण्ये त्र्यंबके गौरी
नारायणी नमोस्तुते।

चित्र में अंतर खोजे!

1) गोपुर के ऊपर हुए बादल
2) वृक्ष के पास में हुए बादल
3) पटाखा
4) पक्षी
5) रंगोली
6) वृक्ष
7) मंदिर का स्तंभ

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

सप्तगिरि

(आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका)

चंदा भरने का पत्र

1. नाम : ....
   (अलग-अलग अक्षरों में स्पष्ट लिखें) ....
   ....
   पिनकोड ....
   मोबाइल नं ....
2. वांछित भाषा : ☐ हिन्दी ☐ तमिल ☐ कन्नड ☐ तेलुगु ☐ अंग्रेजी ☐ संस्कृत
3. वार्षिक चंदा ☐ रु.240/-; जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) ☐ रु.2,400/-
4. चंदा का पुनरुद्धरण :
   (अ) चंदा की संख्या :
   (आ) भाषा :
5. शुल्क का विवरण :
   धनादेश (BC's) / मांगड्राफ्ट संख्या (D.D.) /
   भारतीय डाकघर (IPO) / ई.एम.ओ. (EMO) / :
   दिनांक :

स्थान :

दिनांक : चंदा भरनेवाले का हस्ताक्षर

. . . .

- वार्षिक चंदा : रु.240/-, जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) : रु.2,400/- 'प्रधान संपादक, ति.ति.दे., तिरुपति' के नाम से मांगड्राफ्ट लेकर निम्न सूचित पते पर भेज सकते हैं।
- नवीन चंदादार या चंदा का पुनरुद्धार करनेवाले इस पत्र के कूपन को काटकर, एक कागज पर चंदादार को अपने पूरे विवरण के साथ सुस्पष्ट लिखकर निम्न पते पर भेजना चाहिए।

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे.प्रेस परिसर, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507. तिरुपति जिला, (आं.प्र)

धोखा मत खाओ!

हमारी दृष्टि में आया है कि कुछ लोग 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका की सदस्यता के लिए यह कह कर राशि वसूल करने में मग्न हैं कि वे श्री बालाजी के दर्शन, प्रसाद आदि की व्यवस्था करेंगे। ऐसे लोगों पर विश्वास न करें। उनसे सावधान रहें।

श्री बालाजी के दर्शन और प्रसाद पाने केलिए 'सप्तगिरि' पत्रिका कार्यालय से कोई संपर्क न करें। क्यों कि उन से पत्रिका कार्यालय का कोई संबंध नहीं है। कृपया चंदादार अपना चंदा नकद को सीधा 'प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, ति.ति.दे., तिरुपति' पता को भेजना पडेगा।

ति.ति.देवस्थान ने सदस्यता राशि लेने के लिए किसी व्यक्ति को नियुक्त नहीं किया। अतिरिक्त राशि का भुगतान न करें। दलालों पर विश्वास मत करो।

STD Code:
0877

दूरभाष :
2264359, 2264363

कॉल सेंटर नंबर :
2233333, 2277777.

मंत्र
ॐ नमो वेंकटेशाय

Printed by Sri P. Ramaraju, M.A., and Published by Dr.K. Radha Ramana, M.A., M.Phil., Ph.D., on behalf of Tirumala Tirupati Devasthanams and Printed and Published at Tirumala Tirupati Devasthanams Press, K.T.Road, Tirupati-517 507. Editor : Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D.

दि. 19-08-2022 को श्रीकृष्णाष्टमी के अवसर पर अलिपिरि में स्थित श्री वेंकटेश्वर सप्त गो परिक्रमा मंदिर में ति.ति.दे. ने गो पूजा को धूम-दाम से आयोजित किया है। इस संदर्भ में श्रीकृष्ण भगवान जी का अभिषेक और विशेष पूजाएँ की गयी हैं। तिरुमल और तिरुपति में स्थित श्री एस.वी.गोशाला में भी श्रीकृष्णाष्टमी की पूजाएँ की गयी हैं। इस संदर्भ में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए गए हैं। इन सारे कार्यक्रमों में ति.ति.दे. की न्यास-मंडली के अध्यक्ष श्री वाई.वी.सुब्बारेड्डी, ति.ति.दे. की न्यास-मंडली के सदस्य श्री पी.अशोक कुमार, श्री एम.रामुलु, चेन्नई, स्थानीय सलाह मंडली के अध्यक्ष श्री शेखर, तिरुपति जे.ई.ओ. श्रीमती सदा भार्गवी, आई.ए.एस., तिरुपति जे.ई.ओ. श्री वी.वीरब्रह्मम्, आई.ए.एस., सी.वी. अण्ड एस.ओ. श्री नरसिंह किशोर, आई.पी.एस., आदि उच्च पदाधिकारीगण ने भाग लिया है।

SAPTHAGIRI (HINDI) SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthnams
Printing on 25-09-2022 & Posting at Tirupati RMS Regd. with the Registrar of Newspapers for India under RNI No.10742/1957. Postal Regd.No.TRP/152/2021-2023
"LICENCED TO POST WITHOUT PREPAYMENT No.PMGK/RNP/WPP-04(2)/2021-2023"
Posting on 5th of every month.